अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद् (रजि.)

बुलेटिन

पं. रतनलाल बैनाड़ा स्मृति विशेषांक

पं. प्रवर रतनलाल बैनाड़ा

बैनाड़ा परिवार गौरव 'पंचरत्न'

परिजनों के साथ पं. श्री बैनाड़ा जी

शास्त्रि-परिषद् के अधिवेशन में पं. श्री बैनाड़ा जी

दैनिक कर्तव्य सर्वोपरि

जितना पाया सभी लुटाया

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद् (रजि.)

बुलेटिन

रजिस्ट्रेशन नं. DS/S1530/2019

पं. रतनलाल बैनाड़ा स्मृति विशेषांक

✲ अंक ✲
जुलाई-सितम्बर 2020
(संयुक्तांक)

✲ परामर्श मण्डल ✲
डॉ. श्रेयांसकुमार जैन
बड़ौत (उ.प्र.)
डॉ. वृषभ प्रसाद जैन
लखनऊ (उ.प्र.)

✲ सम्पादक ✲
पं. विनोद कुमार जैन
रजवांस, सागर (म.प्र.)
मो.: 95756 34411
डॉ. सुनीलकुमार जैन 'संचय'
ललितपुर (उ.प्र.)

✲ प्रकाशक ✲
ब्र. जयकुमार निशान्त
पुष्प भवन, पपौरा चौराहा
टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो.: 94251 41697

अनुक्रमणिका

- प्रकाशकीय 02
- सम्पादकीय 04
- अध्यक्षीय 06
- एक महान संस्कृति सेवी सरस्वती पुत्र : पंडित रतनलाल बैनाड़ा 08
- सरलता और विद्वत्ता की प्रतिमूर्ति : पंडित रतनलाल जी बैनाड़ा 12
- अंतर्राष्ट्रीय पाठशाला के जनक पंडित रतनलाल जी बैनाड़ा 15
- एक अनमोल 'रतन' का जाना.... एक युग का अंत 17
- साक्षात्कार (पं. रतनलाल जी बैनाड़ा) 20
- व्हाट्स-एप से प्राप्त श्रद्धा-सुमन 24
- श्रद्धांजलि पंचक 35
- ग्रन्थ समीक्षा 37
- शास्त्रि-परिषद् प्रशिक्षण शिविर एवं खुला अधिवेशन सम्पन्न 39

www.shastriparishad.com

अवसर - अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद् वार्षिक अधिवेशन, प्रशिक्षण शिविर, बाराँ (राज.) **(ऑनलाईन)**
सान्निध्य - सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ससंघ

Indian Overseas Bank, Saharanpur, Account No. 043401000017111 IFSC-IOBA0000434 Punjab National Bank, Bank Account Number 0042000100146664 IFSC - PUNB0004200

लेखकों के विचार से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
लेखों के तथ्यों की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

प्रकाशकीय

ब्र. जय कुमार निशान्त, टीकमगढ़
महामंत्री – अ.भा.दिग. जैन शास्त्रि–परिषद्

कालचक्र सदैव प्रवाहमान रहता है, इसकी नियति का नियंत्रण संभव नहीं है। काल को परास्त करके अमरत्व की गाथा लिखने वाले विरले महापुरुष ही हैं, जिन्होंने सम्यक् पुरुषार्थ से अमरत्व का वरण किया है।

साहित्य सृजन, धर्माचरण और माँ जिनवाणी के अमृत से सांसारिक व्यामोहों से तप्तजनों को संतृप्त करना, जीवन की विकृतियों का निष्कासन कर परिमार्जित करने का पुरुषार्थ काल के मस्तक पर अमरत्व की गौरवगाथा लिखने का पुरुषार्थ युगों–युगों तक कालजयी बनाता है।

हमारे कालजयी पूर्वाचार्यों ने निर्जन एवं एकान्त स्थानों में साधना करते हुए मानव के अवनति कारक एवं अहितकारी कारणों का विश्लेषण तथा उन्मूलन के सूत्र अनुभूत करके उन्हें विभिन्न शास्त्रों में निबद्ध किया था, जो आज भी उतने ही समसामयिक एवं प्रभावशाली हैं। जिन्हें हमने पाश्चात्य संस्कृति, खानपान एवं आधुनिकता के वशीभूत हो उनका मूल्यांकन नहीं किया, विस्मृत कर दिया है।

हमारे पूर्वजों ने जिन्हें अंगीकार करके शारीरिक शक्ति एवं मनोबल को वृद्धिंगत करके सुदीर्घ साधना करके आत्म कल्याण किया, वही क्रियाएं हमें दकियानुसी एवं पुरातनपंथी लगती हैं यथा–भक्तामर, विषापहार, णमोकार साधना, तत्त्वार्थ सूत्र हम सैकड़ों वर्षों से पढ़ते आये हैं। आज भी हजारों श्रावक पाठ कर रहे हैं, परन्तु उनमें छिपे रहस्यों से अनविज्ञ हैं। हमने इनका अर्थ, शब्दार्थ या भावार्थ जानने की कोशिश नहीं की। इनका जीवन में पारायण एवं प्रयोग नहीं किया इनसे ऊर्जा प्राप्त करने का प्रयास ही नहीं किया।

शास्त्रों में वर्णित मानव संरचना एवं उसके रोगों का आध्यात्मिक निदान आज भी उतना ही सटीक एवं प्रभावशाली है। आज वैज्ञानिक जैन सिद्धांतों के आधार से कितनी खोज एवं आविष्कार कर रहे हैं? साधना एवं सम्यक् प्रयोग से असाध्य रोगों की चिकित्सा संभव होने लगी है।

विद्वत् परम्परा के पं. श्रेष्ठी श्री रतनलाल बैनाड़ा ऐसे ही अन्वेषक एवं प्रयोग धर्मी विद्वान थे। जिन्होंने पाठशाला कार्यक्रम, पारस चैनल एवं जिनवाणी चैनल के माध्यम से हजारों श्रावक श्राविकाओं की रुचि मूलपाठ के शब्दार्थ एवं भावार्थ को जानने की जिज्ञासा जागृत की।

आपके शिविरों में स्वाध्याय करके हजारों लोगों ने देवदर्शन, स्तुति, भक्तामर, कल्याणमंदिर, सुप्रभात, स्वयंभू स्तोत्र आदि के अर्थों का पारायण जीवन में पहली बार किया है। आज उनके स्वाध्याय की

दिशा एवं दशा दोनों परिवर्तित हो अध्यात्म की ओर उन्मुख हुई हैं। यही नहीं मूल ग्रन्थ यथा द्रव्य संग्रह, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, समयसार एवं प्रवचनसार जैसे ग्रन्थों के स्वाध्याय के प्रति लोगों में उत्साह एवं उल्लास जागृत हुआ है। इनके जीवन से रूढ़ियों पुरातन परम्पराओं एवं मिथ्यात्वर्धक क्रियाओं का पलायन भी हुआ है। देव–शास्त्र एवं सच्चे गुरु की पहचान के आयाम स्थापित हुए हैं।

ऐसे सम्माननीय श्रेष्ठी, व्रतीश्रावक, सरलता की प्रतिमूर्ति, जिनवाणी आराधक, जिनधर्म प्रभावक, सुधी श्रावकों के प्रेरणास्रोत, गुरुभक्त रतनलालजी बैनाड़ा का कालजयी व्यक्तित्व जिनशासन का गौरवशाली प्रकाश स्तंभ है, जिसके आलोक में युगों–युगों तक जैनधर्म आलौकित होगा। आधुनिक संसाधनों द्वारा हम उनका जितना ज्ञान संजो–संवार पायें, हमारी अमूल्य धरोहर बनेगा। नवोदित विद्वानों का पाथेय बनेगा एवं स्वाध्यायियों के स्वाध्याय के लिए वरदान सिद्ध होगा।

आयुकर्म पर किसी का वश नहीं चलता, काल की कूरता ने भले ही उन्हें गुरुवर से दूर कर दिया था, परन्तु वह अंतिम सांस तक समाधि की भावना भाते रहे, णमोकार का स्मरण करते रहे। कुछ दिन पूर्व ही उन्हें आभास हो गया था, जिससे उन्होंने सभी प्रकार के अन्न का त्याग करके केवल जल एवं दूध ही ग्रहण किया था। अंतिम दिनों में उसका भी त्याग करके मानव जीवन को सार्थक किया है।

बैनाड़ा जी भले ही शरीर से दूर हुए हैं परन्तु उनकी स्मृति सदैव अक्षुण्ण बनी रहेगी। उनके द्वारा कराये गये कार्यक्रम स्वाध्याय, शंका समाधान एवं विचार विमर्श सदैव ज्ञानवर्धन का आधार बनेंगे। हजारों लोगों के मिथ्यातम को दूर करके सम्यक्त्व की ज्योति जगाने वाले बैनाड़ा जी विद्वत् परम्परा के गौरव रहे हैं तथा रहेंगे।

आपके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम उनकी विरासत को संजोकर, व्यवस्थित करके, नवीन पीढ़ी, नवोदित विद्वानों एवं स्वाध्याय प्रेमियों को उपलब्ध करके उनकी भावना को जन–जन तक पहुँचाकर जिनशासन की धर्म प्रभावना करें।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि–परिषद, विद्वत् गौरव पं. श्री रतनलाल जी बैनाड़ा के प्रति श्रद्धावनत होकर बैनाड़ा परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करती है। बिछोह की विरहवेदना के क्षणों में धैर्य एवं साहस का परिचय देकर आदर्श स्थापित करें।

आज सम्पूर्ण विश्व बैनाड़ाजी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करके उनके अनुकरणीय, स्तुत्य प्रयासों के प्रति आभार व्यक्त कर रहा है। ऐसे महनीय विद्वान के प्रति शास्त्रि–परिषद् बुलेटिन का यह अंक आपको समर्पित करते हैं।

कुछ लोग यहाँ पर ऐसे हैं, अवतार नहीं, भगवान नहीं ।
पर ढूँढों तो इस दुनिया में उनके जैसा इन्सान नहीं ।।

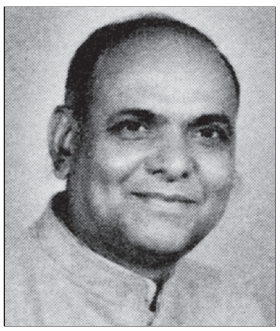

सम्पादकीय

पं. विनोद कुमार जैन रजवांस
संयुक्त मंत्री–अ.भा.दिग.जैन शास्त्रि–परिषद्

शतेषु जायते शूरः सहस्रे चैव पण्डितः।
वक्ता शतसहस्रेषु लोके भवति मानवः।

लोक में सौ पुरुषों में एक शूरवीर होता है। हजार पुरुषों में एक पंडित होता है और लाख पुरुषों में एक वक्ता होता है। विद्वान् अपनी वक्तृत्व कला के माध्यम से धर्म के हार्द को जन–जन तक पहुँचाता है।

पं. रतनलाल बैनाड़ाजी में ज्ञान के साथ वक्तृत्व कौशल का अदभुत संयोग था। जिनवाणी के प्रचार–प्रसार, विद्यादान एवं श्रुत आराधना की प्रबल भावना, उत्साह और कार्य करने का भाव सदा रहा है। आपसे हमारा परिचय लगभग 1996 में हुआ जब हम जिनवाणी का अर्थ लिख रहे थे। मैंने उनसे इस अनुवाद के विषय में अनेक जिज्ञासाएं की जिनके आपने सम्यक् समाधान ही नहीं दिये अपितु सुझावों के साथ मार्गदर्शन भी दिया। सिद्धचक्र विधान का अर्थ देखकर बहुत प्रसन्न हुए इसे आपने आद्योपान्त पढ़ा और दो शब्द भी लिखे।

आगरा हरिपर्वत एम.डी.जैन मंदिर में सिद्धचक्र विधान हुआ। उस समय 8 दिन तक लगातार आह्वान, स्थापन, सन्निधिकरण, पूजन और विसर्जन पर विमर्श हुआ और उसके अनेक सुफल प्राप्त हुए।

सन् 1998 से प्रति दो वर्ष बाद श्रमण संस्कृति संस्थान में शास्त्री और आचार्य के छात्रों को विधि विधान, ज्योतिष, मुहुर्त आदि विषयों के प्रशिक्षण देने का कार्य आपके निर्देशन में ही किया।

इसके साथ ही मैं निरन्तर अपनी जिज्ञासाओं के समाधान आपसे करता रहा। आपको करणानुयोग आदि चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान था। जिन–भाषित में प्रकाशित स्थाई स्तम्भ जिज्ञासा समाधान, पारस चैनल पर प्रसारित पाठशाला और सम्पूर्ण देश में शिविरों के आयोजन से समस्त जैन जगत् में आपके ज्ञान की प्रमाणिकता सर्वमान्य हो गई थी। श्रावक जन, स्वाध्याय प्रेमी, जिज्ञासुओं की जिज्ञासाओं के समाधान आप फोन पर ही कर देते थे। इन जिज्ञासाओं में जो जिज्ञासायें मंदिर, प्रतिमा, प्रतिष्ठा, वास्तु, ज्योतिष एवं सूतक–पातक या इसी प्रकार की अन्य जिज्ञासाऐं देश–विदेशों से उनके पास आती थी उनके समाधान के लिए वह मेरा नम्बर देकर समाधान प्राप्त करने का कह देते थे। यह प्रक्रिया आज तक चलती रही।

आपके साथ रहने का अनेक बार अवसर प्राप्त हुआ। आप के सांगानेर प्रवास पर भोजन करने गये तब मैंने पूछा आप यहां कैसे रहते है यहां ए.सी., कूलर, फ्रिज आदि संसाधन नहीं हैं। तब आपने कहा कि मैं इनके बिना रहने का अभ्यास कर रहा हूं। इस प्रकार भौतिक संसाधनों से रहित, सादा जीवन, सामान्य

वेश भूषा, सात्त्विक भोजन, स्वाध्याय के प्रति लगन, गुरु भक्ति और आस्था की दृढ़ता आपकी पहचान बन गई थी।

हृदय की शल्य क्रिया होने के पश्चात् आपने अपना जीवन उदासीन शैली में जिया जिसे हम वानप्रस्थ अवस्था कह सकते हैं। आपने श्रावक की सम्यक् भूमिका का निर्वाह करते हुए प्रतिमा के व्रत अंगीकार करने का साहस भी किया और उसका सम्यक् पालन भी किया। शिथिलाचार आपको किंचित भी स्वीकार नहीं था। चाहे वह ज्ञान में हो या आचरण में आपने इसका विरोध ही नहीं अपितु निराकरण के उपाय भी किये। ज्ञान के शिथिलाचार में आपकी स्पष्टवादिता जगत् प्रसिद्ध थी।

आपने अपने ज्ञान को श्रमण संस्कृति संस्थान के विद्यार्थियों को प्रदान कर अनुकरणीय कार्य किया है, जिसका सुफल आज देखा जा रहा है। सम्पूर्ण देश में आपके शिष्य धर्म–ध्वजा फहरा रहे हैं। आपके कारण आपके शिष्यों की प्रमाणिकता है।

विद्यार्थियों के प्रति वात्सल्य भाव, वाणी में मृदुता, अनुशासन में कठोरता, गुरु भक्ति की प्रधानता, स्वाध्याय की निरन्तरता, जिनवाणी के प्रचार–प्रसार की लगन ने आपको जैन जगत् के क्षितिज पर उत्कृष्ट स्थान प्रदान किया था। आप जिनवाणी के आगमानुकूल विषयों को कहने में कभी संकोच नहीं करते थे। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रति आपकी अनन्य भक्ति थी।

आपकी श्रुताराधना से लोग आपको प्रमाणिक मानते थे। आपसे श्रावक ही नहीं अपितु विद्वान, आर्यिकायें और साधु भी जिज्ञासायें करके समाधान प्राप्त करते थे। आपकी प्रवचन शैली प्रश्नोत्तर परक होती थी, जिसे व्यक्ति सरलता से समझ लेता था।

आपको धन के प्रति आसक्ति नहीं थी। घर परिवार से उदासीन, व्यापार के कार्य से मुक्त हो गये थे। यश की लिप्सा तनिक भी नहीं थी। अनेक बार आपने अपने सम्मान का प्रतिकार किया। आपका अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशन करने का विचार रखा तब आपने उसे नकार दिया। किन्तु अब आपके व्यक्तित्व–कृतित्व को आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का आधार बनाने को एक स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन अवश्य होना चाहिए, जिससे आपके कृतित्व से अनेक लोग लाभ ले सके।

जिनवाणी उपासक, करणानुयोग के मर्मज्ञ, स्वाध्याय प्रेमी श्रुत संरक्षक, संवर्द्धक, कुशल शिक्षक, श्रेष्ठ प्रवचनकार, श्रमण संस्कृति संस्थान के संस्थापक अधिष्ठाता, जिज्ञासाओं के प्रमाणिक समाधान कर्ता, शिक्षण शिविर एवं पाठशालाओं के गुरुजी श्री पंडित प्रवर रतनलाल जैन बैनाड़ा के देहावसान से जैन जगत् अपने आपको अधूरा सा मानने लगा है। आपकी जीवनशैली, गुरुभक्ति, दृढ़ श्रद्धान, अपार ज्ञान का क्षयोपक्षम एवं शिष्यों के प्रति वात्सल्य भाव मानव जीवन का आदर्श विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शन एवं स्वाध्याय प्रेमियों को प्रेरणा देता था। हम आपके प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए आपकी सद्गति की कामना करते हैं।

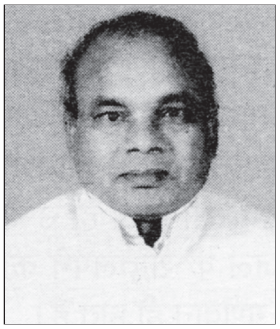

अध्यक्षीय

डॉ. श्रेयांसकुमार जैन, बड़ौत
अध्यक्ष–अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि–परिषद्

लोक कल्याण की भूमिका में जो जीवन और चरित्र रहा करते हैं, वही व्यक्तित्व विद्वत्वर्य पंडित श्री रतनलाल जी बैनाड़ा का था।

विद्वत्वर्य श्री रतनलाल बैनाड़ा जैनागम और सिद्धान्त के उद्भट मनीषी थे, उन्होंने स्वयं के अध्यवसाय से ही चारों अनुयोगों में दक्षता प्राप्त की थी। बाल्यकाल से ही विद्या के प्रति गहरी अभिरुचि रखने वाले श्री रतनलाल जी को उनके पिता जी ने जैन पाठशाला और अपने घर पर विद्वान बुलाकर अध्ययन करवाया था। यौवनावस्था की दहलीज पर कदम रखते ही व्यापार भी संभाला किन्तु व्यापार उनके श्रुताभ्यास में बाधक नहीं बना। ज्ञान के बिना जीवन निरर्थक है। यह समझकर उन्होंने निरन्तर स्वाध्याय किया। स्वाध्याय ज्ञान की वृद्धि के लिए परम निमित्त है। ज्ञान की महिमा उन्होंने जानी थी। जैनशासन में ज्ञान किसे कहते हैं–

जेणतच्चं विबुज्झेज्ज जेण चित्तं णिरुज्झदि।
जेण अत्ता विसुज्झेज्ज तं णाणं जिणसासणे ।।
जेण रागा विरज्जेज्ज जेण सेएसु रज्जदि।
जेण मित्ति पभावेज्ज तं णाणं जिणसाप्तणे।।

अर्थात् जिसके द्वारा तत्त्वों को जाना जाता है, जिसके द्वारा चित्त का निरोध होता है, तात्पर्य है कि मनरूपी गन्धहस्ती वश में होता है व जिसके आत्मा सुविशुद्ध होता है। जिनशासन में उसी को ज्ञान कहा है। जिसके द्वारा रागादि विकार नष्ट होते हैं, जिससे श्रेयोमार्ग में रुचि होती है व जिसके द्वारा जीव मात्र के प्रति मित्रता प्रस्फुटित होती है, जिनशासन में उसी को ज्ञान कहा है।

ज्ञान का सुपरिणाम उन्हें प्राप्त था जो ज्ञान का फल है, वह उनके जीवन में स्पष्ट दिखलायी पड़ता था। वे बड़े सरल थे। विद्याभ्यास के साथ संयम धारण का भाव ही नहीं रखते थे अपितु एक देश संयम ग्रहण कर जीवन को सार्थक बनाया था क्योंकि आगम में स्पष्ट आया है कि **णाणं चरित्तहीणंणिरत्थयं सव्वं।** ज्ञान यदि चारित्र रहित है तो वह सब ज्ञान व्यर्थ है।

पंडितजी पाठशाला गुरुजी के रूप में विख्यात हो गये थे। सतत् विद्यादान करते थे। थकान का अनुभव नहीं करते थे। इस 78 वर्ष की आयु में भी सजग रहना और स्वयं अध्ययन करना और कराना एक श्रेष्ठ विद्यार्थी तथा विद्वान के लक्षणों के अनुरूप सुशोभित भी थे। कहा भी गया है कि **''सुखार्थी चेत कुतो विद्या विद्यार्थी चेत कुतो सुखम्।''** अर्थात् विद्या अभ्यासी को शारीरिक सुख नहीं होता है वह तो

निरन्तर अभ्यासी रहता है। पंडितप्रवर बैनाड़ा जी की श्रुताराधना तो विशिष्ट थी ही साथ में जिनेन्द्रभक्ति और आहार दान के पुण्यार्जन में भी अग्रणी थे, वे जानते थे कि जिनेन्द्र भगवान के चरणों की पूजा से प्राप्त होने वाला पहला पुण्य है। सत्पात्र के लिए दिए हुए दान से उत्पन्न होने वाला दूसरा पुण्य है। व्रतों का पालन करने से उत्पन्न होने वाला तीसरा पुण्य है। पुण्य के अभिलाषी को चतुर्थ उपवास करने का पुण्य है। इन चारों पुण्य के उपार्जन करने के लिए सतत उद्यमशील रहने वाले जैन जगत् के उद्भट मनीषी पंडित श्री रतनलाल बैनाड़ा के पुण्य का विशिष्ट फल रत्नत्रय मंडित परमपूज्य सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज का आशीर्वाद और उनके मुख से तत्त्व चर्चा सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। गुरु के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का सौभाग्य इनके पुण्य का ही फल है। कहा भी है–

गुरोदेव प्रसादेन लभ्यते ज्ञान लोचनम् ।
समस्त दृश्यते येन हस्तरेखेन निष्तुषम् ।।

गुरु के प्रसाद से ही ज्ञानरूपी नेत्र प्राप्त होता है, जिसके द्वारा समस्त विश्वगत पदार्थ हस्तरेखा के समान स्पष्ट दिखायी देते हैं। उक्त तथ्य को जानकर बैनाड़ा जी निर्ग्रन्थ वीतरागी मुनिराजों की वैय्यावृत्ति, वन्दना आदि करते थे। आहारदान में कभी पीछे नहीं रहते थे, हमेशा चौका लगाते थे। अमरकंटक में उनके द्वारा लगाये गये चौके में पंडित श्री गुलाबचन्द्र जी पुष्प, प्राचार्य श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन और मुझे (डॉ. श्रेयांसकुमार जैन) को आहारदान कर पुण्य प्राप्ति का अवसर मिला था। व्रती जीवन जीते हुए उन्हें पूर्ण श्रुताभ्यास कर विद्वत्परम्परा में विशिष्ट सम्मान पाया है। वे सच्चे देव–शास्त्र–गुरु भक्त विद्वान थे। अनेक संगोष्ठियों में हमें उनके साथ शोध पत्र प्रस्तुत करने का अवसर मिला। हमने देखा कि वह शोध पत्र की प्रस्तुति भी पढ़ाने की शैली में ही करते थे। किसी की जिज्ञासा आने पर बिना उद्वेग के सरल ढंग से समाधान करते थे और कोई विरुद्ध बात नहीं करते थे। परम्परा को बदलने और सुधारने में भी बहुत बड़े आत्मबल की अपेक्षा रहती है। हाँ देखने में आया है कि निर्मल जिनशासन में कोई विकृति किसी के द्वारा लाने की कोशिश की गई तो पंडित श्री बैनाड़ा जी ने आगम का आश्रय लेकर उस विकृति को दूर किया। दिगम्बर जैन समाज को निर्मल द्रव्य पूजा पद्धति समझाकर लाखों लोगों को धर्म मार्ग पर लगाया। मैं मानता हूं कि उनकी सरल, सहज शैली ने उन्हें लोकप्रिय बनाया। कभी–कभी फोन पर सैद्धान्तिक चर्चा के माध्यम से भी मैं उनसे प्रभावित हुआ। सभी विद्वानों के लिए उनके ज्ञान की आवश्यकता थी। मैं तो इनकी प्रशंसा इसलिए भी करता हूं कि जो हम लोग हजारों विद्यार्थियों को शिक्षा देकर उपलब्धि नहीं कर सके वो उन्होंने श्रमण संस्कृति सांगानेर के माध्यम से शताधिक विद्वान तैयार कर उपलब्धि और कीर्ति अर्जित की। पंडितजी लाखों वर्षों तक अपनी कीर्ति से जीवित रहेंगे। उन्हें बारम्बार अपनी एवं परिवार की ओर से अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि–परिषद् की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी रिक्तता की पूर्ति हो।

एक महान संस्कृति सेवी सरस्वती पुत्र : पंडित रतनलाल बैनाड़ा

–प्रो. अरुण कुमार जैन
सांगानेर, जयपुर
पूर्वमंत्री –अ.भा.दिग.जैन शास्त्रि–परिषद

बीसवीं/इक्कीसवीं शताब्दी जिन मनीषियों से संसार सुखों को त्यागकर नाना बाह्य और आंतरिक संकटों, आघातों को झेलती हुई जिन संस्कृति के प्रासाद के संरक्षण एवं पुनरुद्धार में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया, जिन संस्कृति के आधार आचार्य प्रणीत जिनागम को जन–जन तक पहुंचाने में अपना महनीय अवदान देकर समाज और देश को सत्सरणि का संदर्शन कराया, भविष्य में भी जिन संस्कृति पर कोई आघात न पहुंचा सके और जैनाचार्यों की वागगंगा का प्रवाह सुदीर्घकाल तक प्रवाहमान रह सके एतदर्थ आगम सेवी सच्चरित्र विद्वानों को तैयार करने में अपना अनर्घ्य योगदान दिया, वाग्देवी के मंदिर को समलंकृत करते हुए मूलाम्नाय विरोधी कथनों/शासन विरुद्ध मान्यताओं को अपने सुतीक्ष्ण तर्कों से खंडित कर आगम का आइना दिखाया, अपने शारीरिक बाधाओं के मध्य जो श्रावकीय चर्या में तनिक भी प्रमाद किये बगैर शिक्षण कर्म से कदापि विरत नहीं हुए ऐसे श्रुत समाराधक मनीषियों की गणना प्रसंग की अग्रणी पंक्ति में कनिष्ठिकाधिष्ठित विद्वान् हैं : पं. श्री रतनलाल जी बैनाड़ा।

अत्यन्त मनोरम व्यक्तित्व में 'सादा जीवन, उच्च विचार' की उक्ति चरितार्थ करना, बाहर से कड़क और अन्दर से नरम महात्मसुलभ बिल्कुल नारिकेल समाकार, सतत–सहयोगशील व्यवहार, देव–शास्त्र–गुरु के प्रति अनन्य आस्थापूर्ण समर्पण, सुसंबद्ध दिनचर्या, शुद्ध सात्त्विक एक बार अन्नाहार, मित–भाषण, कठोर–श्रम के उपरान्त भी निरन्तर ताजगी का अहसास प्रदान करना, संघर्षों के झंझावात में भी अडिगता, अविचलता और निष्कम्पता की मूर्ति, यही है बड़े पंडित जी का व्यक्तित्व।

आज उनके देवलोकगमन के समाचारों के फैलते ही मानो संस्कृति के गगन में निरासा की काली घटाएं छा गयीं हों।

श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर की स्थापना काल सन् 1996 से ही सन्त शिरोमणि पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज एवं संस्थान के संप्रेरक संस्थापक वर्तमान में निर्यापक श्रमण पूज्य मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज के आशीर्वाद से आगरा के अपने विशाल उद्योग और व्यापार को पुत्रों को संभलवाकर भौतिक संसाधन विहीन सांगानेर–संस्थान में अपना आवास बना लिया ताकि संस्थान को देश के उत्कृष्ट गुरुकुल के रूप में परिणत कर सकें और विद्यार्थी– समूह सांसारिक विशाल वैभव का त्याग करने वाले अपने शिक्षा गुरु पंडित जी की श्रावकीय चर्या को देखकर अपने चरित्र को उज्ज्वल कर सकें। अपने जीवन में अमल किये बिना उन्होंने कोई शिक्षा अपने शिष्यों को नहीं दी। आज की तारीख में पूरे भारत में उनकी जोड़ का करणानुयोग विशेषज्ञ दूसरा विद्वान् नहीं दिखता।

ऐसे आगम–सेवी, देशव्रती विद्वान् पं. बैनाड़ाजी का जन्म आध्यात्मिक रचनाकार हिन्दी साहित्य के अमर रचनाकार पंडित बनारसीदास की नगरी आगरा के स्वनामधन्य श्रेष्ठी श्री मिश्रीलाल बैनाड़ा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अशर्फी बाई के संस्कारशील परिवार में जुलाई 1943 में अपने द्वितीय सन्तान के रूप में हुआ। जन्मकाल से स्वर्णिम आभा सम्पन्न होने के कारण पूरे परिवार में रत्न समान होने से पूज्य पिता ने 'रतनलाल' ऐसा सार्थक नामकरण किया। श्री निरंजनलाल आपके अग्रज तथा क्रमशः सर्वश्री मदनलाल, पन्नालाल एवं हीरालाल बैनाड़ा अनुज हैं तथा इन पाँच भाईयों के अतिरिक्त पांच बहिनों में श्रीमती कान्ता प्रकाशचन्द्र बड़जात्या, मेरठ, श्रीमती मनोरमा नरेन्द्र कुमार सौगानी, हाथरस, श्रीमती आभा सुशील कुमार बड़जात्या, बांदीकुई श्रीमती हेमप्रभा पदमकुमार छाबड़ा, बाराबंकी एवं शांतिदेवी विनयकुमार पाटनी, इंदौर हैं। आपके पिताजी सांसारिक सूझबूझ के साथ गहरी धार्मिक समझ वाले सूक्ष्म तार्किक एवं व्यावहारिक बुद्धि सम्पन्न इन्सान थे। पूरे परिवार में धार्मिक वातावरण के प्रतिदिन देवपूजा, शास्त्र स्वाध्याय, समय–समय पर निर्ग्रन्थ गुरु चरणोपासना, एकाशन, पर्व के दिनों में उपवास आदि प्रवृत्तियां चलती रहती थीं।

एक बार श्रद्धेय पंडितजी ने सुनाया था कि हमारे पिताजी सच्चे व्यापारी एवं दीर्घदृष्टि सम्पन्न मानव थे। उनका विचार था कि यदि संतान बाल्यकाल से ही धार्मिक संस्कारों वाली होगी तो वह व्यापार क्षेत्र में और संसार में सफल हो सकेगी अतः उन्होंने अपने पाँचों पुत्रों और पाँचों पुत्रियों के धार्मिक अध्ययन हेतु बयाना निवासी श्री रामचन्द्र जी मोठया के सुपुत्र पं. श्री हुकमचन्दजी को, जो जैन दर्शन के अच्छे विद्वान के साथ ज्योतिष शास्त्र तथा आयुर्वेद के ज्ञाता थे, और जिन्होंने मुरैना विद्यालय में पूज्य आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के साथ अध्ययन किया था, को मनाकर आगरा ले आये और नाई की मंडी स्थित अपने मकान में रखकर उनकी आजीविका की व्यवस्था की तथा घर के निकट एक निःशुल्क औषधालय एवं मंदिरजी में पाठशाला की स्थापना की। ज्ञानी पंडितजी हुकमचन्द जी घर पर सभी सदस्यों को धार्मिक अध्ययन कराते थे। सभी पुत्र–पुत्रियों ने यथायोग्य जैनधर्म का ज्ञान तो प्राप्त किया ही परन्तु ज्ञानावरण कर्म के तीव्र क्षयोपशम एवं तीव्र ज्ञानाभिरुचि के कारण पंडित रतनलाल ने शास्त्र सागर में गहराई तक गोता लगाकर रत्नों को संचित किया और जीवन भर आचार्यों के उपदेशरूपी रत्नों को वितरण करना ही अपना व्यवसाय बना लिया।

लौकिक शिक्षा भी ग्यारहवीं तक प्राप्त कर अपने चांदी के पैतृक व्यापार को संभाला और बड़ी कुशलता से उसे बढ़ाया। 18 वर्ष की आयु में गोकुलपुरा आगरा निवासी धर्म–परायण श्रेष्ठी श्रीमान प्यारेलाल जी पाटनी की पुत्री विमलादेवी से उनका विवाह हुआ। पंडितजी की धर्मपत्नी अत्यधिक सेवाभावी, अतिथि परायण, सहिष्णु तथा वात्सल्य की मूर्ति एक आदर्श महिला हैं जिन्होंने पंडितजी के साथ कदम से कदम मिलाकर उनके हर लौकिक तथा धार्मिक कार्यों में सहयोग प्रदान किया। उनसे

पंडितजी के 2 पुत्र श्री राजेश कुमार एवं मुकेश कुमार हैं, जो इंजीनियर की उच्च शिक्षा प्राप्त कर निजी व्यवसाय में संलग्न हैं तथा एक पुत्री हैं श्रीमती रश्मि अतुल जी जैन, जो दिल्ली निवास करते हुए आदरणीय पंडितजी की सेवा में समय–समय पर उपस्थित होती रहती हैं।

आपने अपने अनुजों को शिक्षा के लिए निरन्तर प्रेरित किया फलस्वरूप दो भाईयों ने इंजीनियरिंग की उपाधि प्राप्त की। पाँचों भाईयों के परिवार को एकजुट रखने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया और भाईयों की तकनीकी योग्यता के अनुसार पूरे परिवार के संयुक्त उपक्रम से पहिले बॉल वीयरिंग के उद्योग की स्थापना की तथा पश्चात ऑटोमोबाईल फैक्ट्री का संचालन करते हुए अपनी कुशलता और गहन अध्यवसाय के बल पर उत्तर भारत के उद्योग जगत में बैनाड़ा परिवार को विशिष्ट स्थान उपलब्ध कराया तथा धार्मिक–सामाजिक क्षेत्र में योगदान के कारण महती प्रतिष्ठा प्राप्त की।

उद्योग जगत् में उच्च प्रतिमानों की स्थापना करते हुए भी आपने श्रावकीय चर्या से कभी समझौता नहीं किया तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़े रहकर नवीन मंदिर की स्थापना के स्थान पर साहू श्री शांतिप्रसाद जी से प्रेरणा प्राप्त कर प्राचीन तीर्थ क्षेत्रों के पुनरुद्धार में अपना योगदान दिया। पपौराजी, अहारजी, देवगढ़ आदि बुंदेलखण्ड के अनेक तीर्थों का उद्धार बैनाड़ा परिवार को सदा याद करेगा।

पंडितजी ने एक बार बताया था कि उनके पिताजी जब इन्दौर में सर सेठ हुकमचन्द जी से मिलने गये थे तब वे हम सभी भाईयों के पूजन के लिए छोटी साईज की धोतियॉ स्पेशल आर्डर देकर बनवाकर लाये थे।

उनके पिताजी प्रदत्त संस्कारों का ही यह सुफल है कि आदरणीय पंडितजी ने सम्पूर्ण जीवन धर्माचरण और धर्म ध्वज के वितान में लगा दिया।

प्रातः काल चार बजे शय्या त्याग कर एक मुहूर्त की सामायिक, लगभग दो घंटे योगासन, भ्रमण एवं प्राणायाम करके स्नानादि कर्म से निवृत्त होकर डेढ़ घंटे तक देवपूजन, पूजन उपरान्त उनकी डेढ़ घंटे तक उनके द्वारा धार्मिक शिक्षण कक्षा चलायी जाती थी। प्रातः ग्यारह बजे भोजन ग्रहण कर मात्र पन्द्रह मिनट के विश्राम पश्चात फिर जिनवाणी की आराधना प्रारम्भ हो जाती थी। नियमित चार–पाँच घंटे निजी गहन स्वाध्याय के साथ पूरे दिन भर भारत भर के स्वाध्यायी वर्गों की मोबाईल पर प्राप्त शास्त्रीय जिज्ञासाओं के समाधान अत्यन्त सरलतापूर्वक किये जाते थे। निजी स्वाध्याय अथवा कक्षा समय में जो कॉल अनुत्तरित रह जाते थे। उन नम्बरों पर वे कॉलबेक करते थे।

समय निकालकर तीर्थ वन्दना और साधु समागमोपासनार्थ वर्ष में चार–पाँच बार जाते थे तथा दशलक्षण पर्व में हमेशा पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज श्री के सान्निध्य में ही व्रताराधना व भक्ति–आराधना करते थे। इस अवधि में निरन्तर उनका चौका चलता था। साधुसन्त को आहारदान उपरान्त भोजन ग्रहण करते थे। आचार्य श्री के चरणों में जब भी उपस्थित होते थे जब उनसे शास्त्रीय

समाधान प्राप्त कर अपनी डायरी में अंकित करते थे। शास्त्राध्ययन की उनकी यह विधि सभी अध्येताओं के लिए अनुकरणीय है, वे जिस भी ग्रंथ का अध्ययन करते थे, उनके संपूर्ण सार और महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को अंकित कर सुरक्षित कर लेते थे। मैंने अनेक अवसरों पर उनकी इन डायरियों/ नोट्स की पंजिकाओं का उपयोग भी किया है जो कुछ भी अध्ययन करते थे, अपनी सूक्ष्मेक्षिका तथा धारणाशक्ति की प्रबलता के कारण उसे अपनी मस्तिष्क में संजो लेते थे।

श्री श्रमण संस्कृति संस्थान के संचालन, संपोषण और विकास में उनका अप्रतिम योगदान है। संस्थान के प्रत्येक कार्य को पूरी निष्ठा से देखना और कोई भी प्रवृत्ति और भी ज्यादा अच्छी कैसे हो सकती है उसकी ओर ध्यानाकर्षण कराकर दुरुस्त कराते थे।

संस्थान के विकास हेतु कमेटी के सदस्यों के साथ विभिन्न स्थलों खनियाधाना की अनेकशः यात्राएं की, आज उनके ही मार्गदर्शन का परिणाम है कि खनियाधाना (म.प्र.) में संस्थान की शाखा गौशाला सी. बी.एस.ई. बोर्ड संबद्ध विद्यालय छात्रावास आदि नाना आयामों के साथ संचालित हैं। बरुआसागर, आहारजी, तिजाराजी, धामनी (महाराष्ट्र) आदि अनेक स्थानों पर पूर्व स्थापित ह्रासोन्मुखी संस्थाओं के उद्धार की भावना से अनेकशः यात्राएं की थी। उनके भावनानुसार अनेक संस्थाओं का उद्धार और नवीन गुरुकुलों की स्थापनाएं पूरी होने से पूर्व ही आयुकर्म की बलिहारी से हमें अनाथ करके देवलोक गमन कर गए।

इस अवसर पर मैं आदरणीय पंडितजी की दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शांति की कामना करता हूँ और उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अभिव्यक्त करता हूँ। यदि हम उनके जीवन सूत्र अपने में उतार सके तो ही उनके ऋण से उऋण हो सकेंगे।

संस्थान की रौनक थी जो जिनसे नाम हमारा था
मिथ्यातम को दूर हटाये जिनको आगम प्यारा था
हम सबके जो बड़े गुरु जी सागर की गहराई से
जैन धर्म के चूड़ामणि थे दर्पण की परछाई से
तुमसे हुई तालीम हमारी तुम चरणों की धूल मिले
मेरा जीवन धन्य हो गया बैनाड़ा जी गुरु मिले

अनेकान्त जैन आदित्य
बम्हौरी

सरलता और विद्वत्ता की प्रतिमूर्ति : पंडित रतनलाल जी बैनाड़ा

– डॉ. कमलेश कुमार जैन
पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
जैन बौद्ध दर्शन विभाग, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी

आदरणीय पंडित रतलालजी बैनाड़ा का स्मरण आते ही एक ऐसी आकृति स्मृति–पटल पर अंकित हो जाती है, जिसमें सरलता, सहजता और वैदुष्य की त्रिपथगा बहती है। इकहरा वदन, सौम्य दृष्टि, चेहरे पर हल्की सी मुस्कान, सफेद टोपी, सफेद कुरती और सफेद पायजामा, बस यही तो है दुबली–पतली, नन्हीं सी जान वाले श्री बैनाड़ा जी। काया और माया का अभूतपूर्व सौन्दर्य। श्री बैनाड़ाजी काया से गौर वर्ण थे। श्री सम्पन्न होते हुए भी उन्होंने कभी माया का प्रदर्शन नहीं किया। लक्ष्मी और सरस्वती का अपूर्व संयोग। उनके चेहरे पर लक्ष्मी का अभिमान कभी झलका नहीं और उनकी सरस्वती का प्रवाह कभी रुका नहीं। कभी भी, और कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो, उन्होंने आगम के विपरीत कभी नहीं कहा और न ही कभी सुना, अपितु सिद्धान्तों के प्रति अपनी आस्था को और अधिक मजबूत किया।

श्री बैनाड़ाजी की दुबली–पतली काया में ज्ञान का अथाह सागर भरा था। जब वे बोलते थे तो पूरे आत्म विश्वास के साथ। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज का सतत आशीर्वाद और निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव 108 श्री सुधासागरजी महाराज की अनन्य प्रेरणा और आशीर्वाद उनके जीवन के संबल थे।

इसके अतिरिक्त समय–समय पर संघ के अन्य सभी साधु–संतों एवं आर्यिका माताओं के दर्शन करने और आहार देने में उनकी रुचि थी। आवश्यकतानुसार संघस्थ मुनियों एवं आर्यिका माताओं से शंकाओं का समाधान प्राप्त करना उन्हें अभीष्ट था, क्योंकि आदरणीय बैनाड़ा सा. का ऐसा मानना था कि शास्त्रों के स्वाध्याय से हम शाब्दिक ज्ञान तो प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु अनुभव की बात तो इन्हीं संतों के श्रीचरणों में बैठकर प्राप्त की जा सकती है। ज्ञान और अनुभव (श्रद्धा) इन दोनों की दिशाएं पृथक्–पृथक् हैं, क्योंकि कोरा ज्ञान कार्यकारी नहीं है, जब तक कि उसमें अनुभव (श्रद्धा) का पुट न हो और जब दोनों का परस्पर मेल होता है तो उसमें से चारित्र की धारा फूट पड़ती है।

आदरणीय बैनाड़ाजी ने स्वाध्याय के बल पर अपने ज्ञान की वृद्धि तो की थी, किन्तु उनका ऐसा मानना था कि जब तक उस ज्ञान को अपने जीवन में उतारने वाले सन्त पुरुषों की जीवनचर्या को निकट से देखा–सुना न जाय तब तक अपने ही सीमित ज्ञान पर सहसा विश्वास कैसे किया जा सकता है? क्योंकि अज्ञानावस्था में शास्त्रों की अधिकांश बातें कपोल कल्पित लगती हैं किन्तु उन आचारगत सिद्धान्तों को सन्त पुरुषों के जीवन में घटित देखते हैं तो आत्म विश्वास को सब्बल मिलता है।

तत्त्वों का चिन्तन करने से, उनमें गोता लगाने से हमें वे दुर्लभ मोती प्राप्त हो जाते हैं, जो अब तक गहरे समुद्र में पानी में विलीन थे। श्री बैनाड़ाजी के चिन्तन का प्रवाह निरन्तर आगे बढ़ता गया और वे सन्तों के और निकट आ गये। इतना ही नहीं, अन्दर से ये अनुभूति होने लगी कि शास्त्रों का जो कथ्य है, वहीं तथ्य है और वहीं सत्य भी है अतः यदि जीवन को सफल बनाना है तो उपर्युक्त अनुभूति को ही अपने जीवन का पथ्य बनाना होगा। वस्तुतः हम सभी भव भ्रमण के रोग से ग्रसित हैं, अतः यदि हमें स्वस्थ रहना है और संसार–सागर से तरना है तो तथ्य को ही पथ्य के रूप में स्वीकार करना होगा।

यह निश्चित है कि तथ्य को स्वीकार कर लेना ही तत्त्व श्रद्धान है और तत्व श्रद्धान से ही तत्त्वज्ञान की प्राप्ति होती है। उसे अपने जीवन में अक्षरशः उतारने से सम्यक् चारित्र की प्राप्ति होती है, जो मोक्षमार्ग में पाथेय का कार्य करती है। इसीलिये श्री बैनाड़ा जी ने गुरु की साक्षीपूर्वक व्रतों को ग्रहण किया था।

बारह भावनाओं का पाठ हमने भी बचपन में अनेक बार किया है किन्तु उनका प्रायोगिक पक्ष पचपन की उम्र में भी अधूरा रहा और जीवन की विषमताओं के कारण आज सत्तर वर्ष की अवस्था में भी तथ्यों पर दृष्टि नहीं जा रही है, यह एक विडम्बना है। जब तक हम बारह भावनाओं में समागत एक–एक शब्द पर गहराई से चिन्तन नहीं करेंगे तब तक सब कुछ गजस्नान की तरह निष्फल है, क्योंकि चिन्तन के अनुकूल संसार के बाह्य पदार्थों में अरुचि होना भी अपेक्षित है और इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि आँख मूँदकर तथ्यों को झुठलाया नहीं जा सकता है।

आदरणीय श्री बैनाड़ा जी की उपर्युक्त तथ्यों पर दृष्टि थी और उन्होंने तदनुकूल अपनी सृष्टि का भी निर्माण कर लिया था। श्री बैनाड़ा जी ने स्वाध्याय के पंच भेद– वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय और धर्मोपदेश को अपने जीवन में उतारा था। एक समय तक उन्होंने घर पर बैठकर ही कुलाचार का पालन करते हुए स्वाध्याय किया। पुनः पूज्य गुरुओं की चरण–सन्निधि में बैठकर पृच्छना करके अपने ज्ञान को पुष्ट किया। तदनन्तर चिन्तन–मनन किया और शास्त्रगत आचार्यों की मूल पंक्तियों को स्मृति–पटल पर संजोया और अन्त में अपने ज्ञान का वितरण भी किया।

ज्ञान का वितरण करने में निमित्त बने पूज्य मुनिपुंगव 108 श्री सुधासागरजी महाराज। एक समय एकान्तवादियों का एक ऐसा झौंका आया कि परस्परागत ज्ञान और आचार की चूले हिलने लगीं। शास्त्रों में उल्लिखित तथ्यों की अशास्त्रीय व्याख्या होने लगी, तथ्यों को झुठलाया जाने लगा, तब पूज्य मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागरजी महाराज ने दीवाल बनकर उस आँधी को रोका और उसे समूल रोकने के लिए आदरणीय रतनलाल जी बैनाड़ा को सुदृढ़ स्तम्भ के रूप को खड़ा कर दिया।

पूज्य मुनिपुंगव 108 श्री सुधासागरजी महाराज की सात्विक प्रेरणा और आदरणीय बैनाड़ा सा. का पुरुषार्थ सक्रिय हुआ तथा भारत में हृदयस्थल जयपुर के सन्निकट सांगानेर में सन् 1997 में श्रमण संस्कृति संस्थान की स्थापना हुई और उसके कर्णधार बने आदरणीय श्री रतनलाल जी बैनाड़ा।

श्री बैनाड़ा जी ने उन्मुक्त हृदय से पूज्य मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज के प्रति अपनी सम्पूर्ण श्रद्धा उड़ेल दी। मुनि श्री ने भी श्रमण संस्कृति संस्थान के अधिष्ठाता पद पर उनको अभिषिक्त कर दिया। आगमोक्त ज्ञान की धारा प्रवाहित होने लगी। श्री बैनाड़ा जी ने बिना किसी चाह के श्रमण संस्कृति संस्थान के माध्यम से एक ऐसा मजबूत शिष्य–मण्डल तैयार कर दिया, जो अपने पैरों पर खड़ा रहकर अपनी परम्परागत संस्कृति की रक्षा के लिए प्राचीर की तरह सतत सन्नद्ध है।

श्री बैनाड़ा जी अपने पुण्योदय से एक वटवृक्ष के रूप में उभरे और आज उसकी शाखा–प्रशाखाएं न केवल भारतवर्ष में, अपितु विदेशों में भी फैल गई हैं। अपने पुरुषार्थ से सिञ्चित एवं पल्लवित–पुष्पित शाखाओं के माध्यम से श्री बैनाड़ा जी आज भी जिन्दा हैं और भविष्य में भी जिन्दा रहेंगे।

श्री बैनाड़ाजी का यह अटल विश्वास था कि 'मणि–मंत्र–तंत्र बहु होई, मरते का बचावे कोई' और उसी का अनुसरण करते हुए उपसर्ग–सल्लेखना पूर्वक उन्होंने अपनी भौतिक काया का 16 अगस्त 2020 को प्रातःकाल 9.30 बजे देव–शास्त्र–गुरु का स्मरण करते हुए विसर्जन कर दिया, किन्तु वे अपने ठोस कार्यों एवं अपनी शिष्या–परम्परा के माध्यम से सैकड़ों–सैकड़ों साल तक जीवित रहेंगे और अपना यशःसौरभ बिखेरते रहेंगे।

मैं उनके अगाध ज्ञान को विनम्र प्रणाम करता हुआ अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

गुरु जी के चरणों में सविनय श्रद्धांजलि

ज्ञान उच्च कोटि के धारक, साधक आतम राम के,
करुणा हृदय, वात्सल्य के धारी, गुरु जी उत्तम राह के।
गुरु विद्या से विद्या धारी, दे विद्या उपकारी थे,
रतन ज्ञान के रतनलाल जी, रतन बने विद्या धर के।।

सेवाभावी पर उपकारी, सम्यक् ज्ञान के धारी थे,
हित से सहित रहे गुरुजी, धी, श्री दोनों के धारी थे।
समता भावी चिन्तन दाता, बोध शोध सद् धारी थे,
कर्तव्य निष्ठ शिक्षा के दाता, उन्नत सोच प्रदायी थे।।

निर्मल मन की आभा धर के, निर्मल मन सत्कारी थे,
निर्मल शुभ करमन के कर्ता, निर्मल उत्तम उपकारी थे।
मन निर्मल तो सबके करके, निर्मल ज्ञान विरागी थे,
निर्मल बुद्धि करने वाले, गुरु हम सबके उपकारी थे।।

डॉ. निर्मल शास्त्री, टीकमगढ़

अंतर्राष्ट्रीय पाठशाला के जनक पण्डित रतनलाल जी बैनाड़ा

– सुरेश जैन (आई.ए.एस.)
30, निशात कालोनी, भोपाल 462003
मोबाईल 94250 10111
E mail scjain17@gmail.com

1. श्री पण्डित रतनलाल जी बैनाड़ा को हम और हमारी धर्मपत्नि न्यायमूर्ति विमला जैन अपने श्रद्धासुमन समर्पित करते हैं। पण्डित बैनाड़ा जी सतत स्वाध्याय, पठन और पाठन से विश्व प्रसिद्ध पण्डित बन गए। देश तथा विदेश के अनेक बुद्धिजीवियों को उन्होंने अपनी पाठशाला में छहढाला, रत्नकरण्ड, पुरुषार्थ सिद्धयुपाय और मोक्षशास्त्र जैसे आधारभूत, मौलिक और प्राथमिक जैन शास्त्रों का अध्ययन कराया। प्रत्येक शब्द का सरल शब्दों में अर्थ समझाया।
2. गत शताब्दि में नैनागिरि में श्री निर्मल कुमार जी सेठी, अध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के साथ समवसरण मंदिर का शिलान्यास किया। दो वर्ष पूर्व आपके भाई श्री पन्नालाल बैनाड़ा ने हमारे निवेदन तथा पूज्य प्रमाणसागर जी की प्रेरणा से नैनागिरि के पर्वत पर आचार्य विद्यासागर जी के स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव के अवसर पर देश के सर्वोच्च संयम कीर्ति स्तम्भ का संस्थापन किया।
3. भोपाल में आचार्य विद्यासागर प्रबंध विज्ञान संस्थान की स्थापना के संबंध में हमारे द्वारा प्रस्तुत विचार पत्र एवं संविधान की सराहना करते हुए रुपये पचास लाख का अपना प्राथमिक वित्तीय सहयोग दिया। अपने भाई देश के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री मदनलाल जी बैनाड़ा को संस्थापक अध्यक्ष एवं हमें संस्थापक प्रबंध निदेशक मनोनीत कराया और अपना पूरा सहयोग दिया। श्री मदनलाल जी ने हमें संस्थान के संस्थापन एवं गत 25 वर्षों तक सफल संचालन में समय–समय पर सभी प्रकार की सहायता की। इसी के परिणाम स्वरूप यह शैक्षणिक संस्थान पूरे देश में ही नहीं अपितु विश्व के प्रमुख नगरों में अपना सम्माननीय स्थान बना सका। जैन समाज का अपने ही वित्तीय स्रोतों से गत 25 वर्षों में 1500 से अधिक व्यक्तियों को एम.बी.ए. की शिक्षा प्रदान कर चुका है।
4. बैनाड़ा जी जैन धर्म और संस्कृति के दिग्गज पण्डित रहे। किसी औपचारिक उपाधि के बिना ही जैन जगत् के अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर छा गए। वे सांगानेर जैन विद्यालय के संस्थापक अधिष्ठाता रहे। उन्होंने डॉ. शीतलप्रसाद जैसे वरिष्ठ विद्वानों के साथ अनेक छात्रों को स्वयं प्रशिक्षण देकर उन्हें जैन संस्कृति का विद्वान बना दिया। इस विद्यालय से निकले 200 से अधिक विद्वान वर्तमान में राजस्थान और मध्यप्रदेश के शासकीय विद्यालयों में कार्यरत हैं और जैन धर्म के शिक्षण, प्रचार और प्रसार का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहें हैं।

5. हम बैनाड़ा जी के आध्यात्मिक अवदान की सराहना करते हैं। हम उनके परिवार के सभी सदस्यों की सराहना करते हैं जो उनके साथ देश के अनेक ग्रामों और नगरों में विपरीत परिस्थितियों में रहकर उनके शिक्षण–प्रशिक्षण के कार्यों में सतत सहयोग देते रहे। परिवार के पूरे सहयोग के बिना इतनी ऊँचाई पर पहुँचना कठिन होता है।

6. बैनाड़ा जी आचार्य विद्यासागर जी के निकटस्थ विद्वान् रहे। विद्यासागर युग के वे महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर बन गए। उनके कूल अंदाज ने युवक और युवतियों को संप्रेरित किया। दबाव के क्षणों में भी वे अपने ज्ञान की कीर्ति फैलाते रहे।

7. श्री बैनाड़ा जी ने भोपाल से 12 वर्षों तक जिनभाषित पत्रिका का प्रकाशन कराया। देश के सुप्रसिद्ध वरिष्ठतम विद्वान् प्रो. (डॉ.) रतनचन्द्र जैन ने इसका सफल संपादन किया। अपने विशाल ज्ञानकोश और प्रभावी संपादन कौशल से अपने गुरुदेव और प्रकाशक को हिमालयीन ऊँचाई दी। अपनी विश्वविद्यालयीन ज्ञान संपदा से इस पत्रिका को नई ऊर्जा प्रदान की। बैनाड़ा जी को इस पत्रिका के माध्यम से देश के सुप्रसिद्ध और शीर्षस्थ विद्वानों के बीच सफलतम सेतु का निर्माण करने और अपने ज्ञान कोश में वृद्धि करने का अवसर मिला।

9. प्रभु से प्रार्थना है कि आदरणीय बैनाड़ा जी की आत्मा को शांति मिलें। सद्गति प्राप्त हो। उनके परिवार को यह गहन दुःख सहन करने की शक्ति प्राप्त हो। उनके मानस पुत्र डॉ. किरण प्रकाश जैन, सांगानेर को अपने गुरु के पथ पर आगे चलने की पूरी शक्ति और क्षमता प्राप्त हो।

ज्ञान के धारी सबसे महान।
करणानुयोग की रहे शान।।
श्रमण संस्कृति का करके उत्थान।
युवा विद्वानों की धारे रहे कमान।।
शील, संयम, चारित्र की हो आप खान।
ऐसे रतनलालबैनाड़ा गुरुजी को मेरा शत शत प्रणाम।।

अनिल साहित्याचार्य
सागर

एक अनमोल ''रतन'' का जाना... एक युग का अंत

–डॉ सुनील जैन संचय, ललितपुर
संपादक मण्डल सदस्य, शास्त्रि–परिषद् बुलेटिन

समाजसेवी, उद्योगपति, जिनवाणी के परम प्रभावक, करणानुयोग के प्रकांड विद्वान् संयमित जीवन जीने वाले, आदर्श, अत्यंत गुरुभक्त, परम आदरणीय पंडित श्री रतनलाल बैनाड़ा जी आगरा का आकस्मिक हम सब को छोड़ कर जाना दिल को आघात पहुंचा रहा है..! जयपुर से आयी बेहद दुःखद खबर का हम यकीन नहीं कर पा रहे हैं कि अब बैनाड़ा जी हमारे बीच में नहीं हैं । उनके निधन के समाचार को सुनकर स्तब्ध हूँ।

'एक सूरज था कि तारों के घराने से उठा।
आँख हैरान है क्या शख्स जमाने से उठा।।'

जैन समाज का ज्ञान– सूर्य अस्त हो गया, नहीं रही वह रोशनी जिसने हजारों जिंदगियों को रोशन किया, जिन्होंने जिनवाणी की पताका दिग्–दिगन्त पहुँचाई, जिसने धर्म के मर्म को जन–जन तक पहुँचाया। पूरे देश में जैन धार्मिक शिविरों के प्रचारक एवं प्रशिक्षक, पाठशाला वाले गुरु जी के नाम से विख्यात, सैकड़ों युवा विद्वानों के अद्वितीय शिल्पकार , विराट व्यक्तित्व के धनी आदरणीय बैनाड़ा जी के जाने से विद्वत् परंपरा के एक युग का अंत हो गया है। उनके चलें जाने से सम्पूर्ण जैन समाज और विशेष रूप से विद्वत् समाज को अपूरणीय क्षति हुई है, हमने करणानुयोग के वेमिशाल, निर्भीक ,अप्रतिम प्रतिभावान विद्वान को खो दिया है ।

उनके आदर्श जीवन से अनेक प्रेरक प्रसङ्ग जुड़े हुए हैं। अक्सर ऐसा कहा जाता है कि जो पंडित होते हैं वह व्रत, नियम नहीं लेते, लेकिन आपने संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दो प्रतिमा के व्रत लेकर इसे झुठलाया। ऐसा कहा जाता है कि जहां लक्ष्मी है वहां सरस्वती नहीं ,जहां सरस्वती है वहां लक्ष्मी नहीं, लेकिन उन्होंने वैभव के बीच में ज्ञान की आराधना करके समाज के सामने एक श्रेष्ठ आदर्श उपस्थित किया ,जो स्तुत्य है। आदरणीय बड़े पंडित जी के नाम से अपने शिष्यों के मध्य विख्यात बैनाड़ा जी अक्सर कहा करते थे ज्ञान भले ही कम हो लेकिन वह आचरण में झलकना चाहिए। बैनाड़ा जी ज्ञान और चारित्र दोनों से सम्पन्न थे। उनका यह आदर्श सभी के लिए अनुकरणीय है। ज्ञान के साथ चारित्र का होना यह विद्वान् के जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। केवल मात्र ज्ञान कार्यकारी नहीं है। आदरणीय बैनाड़ा जी ने ज्ञान और चारित्र के साथ जो ज्ञानदान दिया है वह अतुलनीय, प्रेरणादायी, अमूल्य है। उनका सादा, सरल जीवन सदैव जीवंत रहेगा। उनके कंठ में मानो

सरस्वती विराजित थी। जब वह अध्ययन कराते थे तो एक–एक शब्द बड़ा ही स्पष्ट होता था। जिसे श्रोता मंत्रमुग्ध होकर सुनते थे शायद इसलिए उनके चाहने वाले उन्हें ''बोलती जिनवाणी'' बोलते थे।

जैन–दर्शन के गूढ़ रहस्यों का समाधान वे जिस सरलता व सहजता से करते थे वह अपने आप में अनोखी, अनूठी थी। यही कारण है कि उनकी वाणी सुनने के लिए श्रोता ही नहीं विद्वत् वर्ग भी आतुर रहता था। उनसे अनेक मुनिराज भी शंका समाधान किया करते थे। वे बहुत ही ऊर्जावान थे। उनकी ऊर्जा, चर्या शायद भूतो न भविष्यति। आपके द्वारा किया गया उपकार स्वर्णिम अक्षरों में इतिहास में दर्ज रहेगा। उन्होनें जैनधर्म को न केवल जैन समाज तक बल्कि जन –जन तक पहुँचाया है। कांग्रेस पार्टी के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राहुल गांधी जी को आपने बड़े ही सरलतम तरीके से जैनधर्म के बारे में अध्ययन कराकर एक अनूठा कार्य किया था।

बाईपास सर्जरी होने के बाद भी उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और व्रतों का पालन करते हुए जिनवाणी का ज्ञान लोगों तक पहुँचाने में अहर्निश तत्पर रहे, वे सचमुच में जिनवाणी के लाल ''रतन'' थे। ऐसे बेशकीमती ''रतन'' का हमसे जुदा होना बहुत बड़ी क्षति है।

'साधना की जगमगाती देहरी से, एक दीपक फिर किनारा कर गया।
मंजिलों की दूरियां पूछें कहाँ से, मील का पत्थर किनारा कर गया।।'

समाज में जो शून्यता उनके जाने से हुई है उसकी भरपाई में बहुत समय लगेगा !

श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के लिए वे प्राण–पण से समर्पित रहे। संस्थान से विद्वानों का एक ऐसा आधार स्तंभ खड़ा कर गए जो सदियों तक उन्हें जीवंत बनाये रखेगा। वे संस्थान के पर्याय बन चुके थे। जो उन्होंने अपने जीवन में आदर्श स्थापित किये अब उन पर उनके शिष्यों को चलने का समय है। उन्होंने वैभव के बीच में ज्ञान की आराधना करके समाज के सामने एक श्रेष्ठ आदर्श उपस्थित किया। आदरणीय बैनाड़ा जी का मार्गदर्शन, सान्निध्य पाने का मेरा भी सौभाग्य रहा है। उनके द्वारा दी गयी शिक्षा, प्रोत्साहन मेरे जीवन की अमूल्य पूंजी है। जब भी मिलते थे वह कहते थे ''अच्छा लिख रहे हो, खूब लिख रहे हो, इसी प्रकार जिनवाणी की प्रभावना करते रहो।''

उनके आदर्श जीवन, उनके प्रेरक कार्यों को समेटे एक स्मृति ग्रंथ का जल्द ही प्रकाशन कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित की जानी चाहिए। इस ग्रंथ में खासतौर से उनके शंका–समाधान के प्रश्नों को जरूर स्थान दिया जाना चाहिए। जैसा कि श्रद्धांजलि सभा के दौरान जिनवाणी चैनल पर चल रहा था कि बैनाड़ा जी ने परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से 20 हजार शंका–समाधान किये। ये शंका–समाधान जितनी भी संख्या में कहीं भी लिपिबद्ध हों, इनको स्मृति ग्रंथ में प्रमुखता से प्रकाशित किया जाय तो ऐतिहासिक कदम होगा।

समाज का बहुभाग आपके वैदुष्य से प्रभावित था। स्वाध्याय शील होने के कारण शास्त्रों में पारंगत होकर समाज, विद्वान् और साधु समुदाय को आपने निरंतर लाभ पहुँचाया। जैन समाज, संस्कृति एवं धर्म के प्रति उनका प्रदेय किसी से छिपा नहीं है। जाज्वल्यमान दीपक की भांति आपने हजारों लोगों को सम्यग्ज्ञान की किरण प्रदान की। आप अपार भीड़ में जनमानस को मंत्र मुग्ध कर आगम के उद्धरणों से ही मनभावन शैली में विषय का प्रतिपाद्य हृदयग्राह्य बनाने में कुशल थे। वे आडंबर से दूर, आचरण निष्ठ मनीषी थे, जो अनुकरणीय है। वे ज्ञान का सागर और जैन समाज की अमूल्य धरोहर थे। श्रुत की साधना और आराधना ही उनके जीवन का ध्येय था।

जैन जगत् के ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व का जाना बेहद दुःखदायी क्षण हैं। वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को चिर– शांति और शीघ्र अभ्युदय की प्राप्ति हो, यही कामना करता हूँ । अनंत, अशेष स्मृतियों को याद करते हुए उनके चरणों में अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि!

श्रद्धांजलि

आगमज्ञाः महाप्रज्ञाः शिक्षणे पटवस्तथा।
स्वनामधन्याः पुरुषाः जैनधर्मप्रभावकाः।।
रतनलालबैनाडानामधेया हि पण्डिताः।
इहलोकं विहायाद्य रराजन्ते दिवौकसाः।।
येषां मनुष्यपर्यायः जिनवाण्यै समर्पितः।
स्वाध्यायमुनिभक्तिभ्यां लोको येन सुप्रेरितः।।
सहस्रं विद्वांसः शिष्याः भारते भान्ति भासमाः।
तेषां चन्द्रिकायाः हि प्रभावोऽयं विलोक्यते।।
येषामाशीःप्रसादेनोपकृता अभवञ्जनाः।
तद्दिष्टेन च मार्गेण भवेयुरग्रगामिनः।।
द्युलोकादपि तस्याशीरस्मानुपकृतान् कुर्यात्।
जिनेशं जिनगुरुं च वयं प्रार्थयामस्तथा।।

शिखरचन्द जैन
मालपुरा

साक्षात्कार

(पं. श्री रतनलाल जी बैनाड़ा, आगरा दिनांक 03.03.2009)

द्वारा – पं. सनतकुमार विनोद कुमार जैन, रजवांस

पं. विनोद – आपने प्रारंभिक शिक्षा कब, कैसे आरंभ की, उस समय परिस्थितियाँ कैसी थी?

श्री बैनाड़ा जी – हमारे पिताजी की ये इच्छा थी कि बच्चों में धार्मिक संस्कार रहें। उनके जब पहले पुत्र, हमारे बड़े भाई श्री निरंजनलाल जी हुये, तभी उन्होंने हमारे घर के सामने एक पाठशाला प्रारंभ कराई। पाठशाला में समाज की ज्यादा रुचि नहीं थी, लेकिन पिताजी का कहना था कि यदि पाठशाला नहीं होगी तो बच्चों को संस्कारित कौन करेगा। पं. हुकुमचन्द्र जी सा. बयाना को मोरैना विद्यालय से लाकर शिक्षक नियुक्त किया गया। उन्होंने पाठशाला में अध्यापन कार्य किया। कुछ पूर्व जन्म का अच्छा संस्कार कहो या अच्छी होनहार कहो, ऐसा होना हुआ कि जो गुरुजी पढ़ाते थे, उसमें हमारा मन अच्छी तरह लगता था। उसका परिणाम ये हुआ कि चार वर्ष की उम्र में हमने धार्मिक शिक्षण प्रारंभ किया। जब तक गुरुजी का स्वास्थ्य अनुकूल रहा तब तक 45 वर्ष तक उनसे बराबर पढ़ता रहा और वह शिक्षण अच्छी तरह हृदयंगम भी हुआ। गुरुजी ने करीब हजार दो हजार छात्रों को पढ़ाया होगा, लेकिन मेरे अलावा और सब लोग उन्हें छोड़कर चले गये। मैं उनके साथ निरंतर लगा रहा। उनके बाद ब्र. सुरेन्द्रनाथ सा. ने समयसार, प्रवचनसार आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय कराया और जब उनकी समाधि हुई तब से (15–20 वर्ष हो गये) आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से मैं अपने प्रश्नों के उत्तर लेकर अपने ज्ञान का परिमार्जन करता रहता हूँ।

पं. विनोद – आपने लौकिक शिक्षा कहां तक प्राप्त की?

श्री बैनाड़ा जी – हाईस्कूल आर्ट साइड से पास किया और ग्याहरवीं कक्षा मैंने साइन्स से पास की। हम पाँच भाई पाँच बहिन हैं। गुरुजी की इच्छा थी कि ये व्यापार में जल्दी लग जाये और शिक्षा कम ग्रहण करें, तो ग्यारहवीं कक्षा पास करने के बाद जब मैं मात्र चौदह वर्ष का था, तभी पहली फैक्ट्री हमने खोल ली थी।

पं. विनोद – धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों में आपने किसे आदर्श माना?

श्री बैनाड़ा जी – मैंने सामाजिक कार्यों में कभी रुचि नहीं ली, क्योंकि मैं जानता हूँ कि आज कल सामाजिक कार्यों में शुभोपयोग बहुत कम रहता है। बल्कि अशुभोपयोग की व्यवस्थाएँ बहुत रहती हैं। ब्र. सुरेन्द्रनाथ जी सा. जब समयसार पढ़ाया करते थे। जब ये अच्छी तरह समझा दिया था कि सामाजिक कार्य करना या कोई पद लेकर सम्मिलित नहीं होना, अतः हमने कभी उस तरह का कार्य नहीं किया। लेकिन जहाँ तक सामाजिक थोड़े बहुत कार्य करने का प्रश्न है, मुझे हमेशा धार्मिक कार्य ही पसंद आते थे। मैंने अन्य किन्हीं कार्यों को लिया ही नहीं, और जैसे मेरी उम्र बढ़ती गई मैं धार्मिक कार्यों में अपने

आपको लगाता रहा। असल में सबसे ज्यादा धार्मिक कार्यों में लगना तब हुआ जब 1994 में मेरी बायपास सर्जरी हुई। मैंने होश में आते ही विवाह, व्यापार एवं मौत, जिंदगी उठावनी आदि सबका त्याग कर दिया। उसके बाद सिर्फ एक ही काम था, सुबह से शाम तक स्वाध्याय करें और कराएं। आचार्य श्री के आशीर्वाद से सन् 1997 से संस्थान में जुड़ा। सारा समय धार्मिक कार्यों में ही लगता है।

पं. विनोद – धार्मिक कार्यों में लगने पर आपने किसी को आदर्श तो माना ही होगा?

श्री बैनाड़ा जी – हमारे आदर्श तो पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज हैं। जब सन् 1997 में संस्थान से जुड़ा तब मैंने आचावर्य श्री से पूछा क्या इसमें जुड़ना उचित होगा। तब उन्होंने मुझसे कहा था तुमने व्यापार तो छोड़ ही दिया आपके लिये ये ही उपयुक्त है इसमें लग जाओ अच्छी तरह से कार्य करो हमारा आशीर्वाद है। उनका आशीर्वाद रहा और मैं कार्य में लगा।

पं. विनोद – धार्मिक कार्य एवं संस्थान से जुड़ने के पीछे आपका उद्देश्य क्या है?

श्री बैनाड़ा जी – मेरा मूल्य उद्देश्य शुभोपयोग में लगे रहना, अपने परलोक का बहुत ध्यान रखना एवं उपयोग को अच्छा बनाये रखना है।

पं. विनोद – संस्थाओं से जुड़ने से शुभोपयोग नहीं हो सकता है। शुभोपायोग तो अपने आध्यात्मिक चिन्तन आदि से ही संभव है। आज कल संस्थाओं में बहुत उलझाव हैं फिर इनमें आप शुभोपयोग कैसे कर पाते होंगे?

श्री बैनाड़ा जी – श्रमण संस्कृति संस्थान में अधिष्ठाता पद पर हूँ। लेकिन मैंने अपने जिम्मे और कुछ नहीं लिया, सुबह से शाम तक पढ़ने–पढ़ाने का काम करता हूँ। मैं जानता हूँ अन्य कार्यों में उलझने में सामाजिक संस्थाओं में बहुत कष्ट हैं। काम करो तो लोग काम नहीं करने देते, इसलिए मैंने एक ही कार्य लिया है। पढ़ना और पढ़ाना। दिन में चार या पाँच घंटे पढ़ाता हूँ शेष समय में स्वाध्याय करता हूँ। वहाँ जितने प्रशासनिक कार्य हैं, मैं उनसे उलझता ही नहीं, इसलिए उपयोग के खराब होने की कोई बात ही नहीं।

पं. विनोद – मैं देख रहा हूँ 1997 से लगभग बारह वर्ष हो गये संस्थान से ज्ञानवान, होनहार स्वाध्यायी, अच्छे वक्ता, विद्वान् निकल रहे हैं। देश–विदेश में प्रभावना कर रहे हैं। आप किस विधि से इन्हें तैयार करते हैं जिससे आपको यश मिल रहा है?

श्री बैनाड़ा जी – मुख्यता तो गुरुकृपा की है। आशीर्वाद आचार्य श्री का एवं प्रेरणा श्री सुधासागरजी की रही, उससे ये कार्य अच्छा प्रारंभ हुआ। बच्चे अच्छे निकल रहे हैं, उसमें मुख्यता है समर्पण की। मैं पूरे समर्पण भाव से कार्य करता हूँ। मैंने अपने नीचे जो शिक्षक तैयार किये हैं वो इतने अच्छे हैं कि वे जीवन भर के लिये संकल्पित होकर इस समय पढ़ाते हैं, हमें कहीं नहीं जाना लक्ष्मी का जरा भी लोभ लालच उनको नहीं है। जब ऐसी भावना उत्पन्न हो जाती है, तब कुछ भी हो छात्र अच्छे तैयार होंगे ही होंगे। एक ही लक्ष्य है अच्छे छात्रों को तैयार करना। ये भी तो धर्म का अंग है। इसी तरह तो

प्रभावना होगी। जहाँ हमारे बच्चे जाते हैं वहाँ से प्रशंसा पत्र आते हैं, तो सच बात ये है कि हमारा चेहरा ही नहीं, हमारा मन प्रफुल्ल हो जाता है, और हमें बड़ी प्रसन्नता होती हैं

पं. विनोद – समाज में अनेक विसंगतियाँ रही हैं, आज भी हैं। आप उनसे कैसे जूझे, आपने उन्हें कैसे ठीक किया, कुछ अनुभव बतायें?

श्री बैनाड़ा जी – समाज की विसंगतियाँ कुछ तो ऐसी हैं जिनको हम बहुत हल्केपन से हल करने का प्रयत्न करते हैं। जैसे महाराष्ट्र आदि दक्षिण भारत में हमें काम करने का मौका मिला। वहाँ गृहीतमिथ्यात्व बहुत है। हमने इसे हटाने की कोशिश की उसमें बहुत सफलता मिली। कुछ विसंगतियाँ ऐसी हैं जो लोगों के अन्तरंग तक प्रवेश कर चुकी हैं। उनको हटाने की कोशिश नहीं की। जैसे बीसपंथ की परम्परा है फल–फूलों से पूजा आदि, हमने उनको हटाने की कोशिश नहीं की। हमने उन लोगों को आगम का सही अध्ययन कराया। हिंसा–अहिंसा के प्रकार बतलाये। उन्हें समझाया कि आगम में तेरापंथ, बीसपंथ की क्रियाओं का वर्णन तो है, पर बीसपंथ से तेरापंथ में हिंसा कम है तो लोग स्वयं ही बदल गये। विसंगतियों से जूझने का काम नहीं। व्यक्ति को सही बात समझाई जाय तो बड़े आनन्द से प्रसन्नता पूर्वक अच्छे मार्ग को पकड़ लेता है, हमने तो जीवन में ये ही किया है।

पं. विनोद – समाज को आपने बहुत दिया, युगों–युगों तक आपको और आपके कार्यों को लोग याद करेंगे लेकिन समाज ने आपको क्या दिया?

श्री बैनाड़ा जी – मैं ये मानता हूँ कि मैंने समाज को कुछ नहीं दिया। मैं तो अपने शुभोपयोग को कार्य करता हूँ। मैं सोचता हूँ गुरुकृपा से जो मिला है उसे ज्ञानदान के रूप में बाटेंगे तभी तो अगली पर्यायों में ज्ञान की प्राप्ति होगी । भावना एक ही रखता हूँ कि अँगली पर्यायों में जहां पैदा होऊ वहाँ निरन्तर ज्ञान बढ़ता हुआ रहे। बहुत कृपा हो श्रुतकेवली बन जायें या इसके ऊपर चले जायें। ये ही भावना रखता हूँ। समाज ने मुझे क्या दिया? एक सूत्र पढ़ते हैं परस्परोपग्रहो जीवानाम् कुछ समाजें ऐसी भी हमारे देखने में आयीं जिनको हमने पढ़ाया, उन्होंने अपने जीवन में उतारा और चारों ओर फैलाया। मै समझता हूँ यह उन समाजों का मेरे ऊपर उपकार हैं

पं. विनोद – आज समाज में कैसे लोगों की आवश्यकता है। किन वस्तुओं की एवं कैसे वातावरण की आवश्यकता है, जिससे वह आगे बढ़ सकें?

श्री बैनाड़ा जी – समाज में आवश्यकता सुलझे हुये लोगों की है। समाज में ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो अपव्यय को रोकें और धन का उन क्षेत्रों में खर्च कराये जिससे समाज का उत्थान हो, धर्म का उत्थान हो। आज कल धन का अपव्यय बहुत देखा जाता है इससे बचना चाहिए। इससे भी समाज में बहुत जागृति आयेगी। दूसरी बात आज ज्ञान नहीं होने के कारण जो भी साधु या विद्वान् जैसा कहता है समाज वैसा भटक जाता है। इसलिए मैं तो कहूँगा कि समाज को आगम का ज्ञाता होना चाहिए ताकि धार्मिक परम्परा हमारी संतान, हमारे संस्कार सब ठीक बने रहें।

पं. विनोद – आज समाज के उत्थान के लिए साधुओं को क्या करना चाहिए?

श्री बैनाड़ा जी – साधु विशेष रूप से जहाँ चातुर्मास करते हैं। वहाँ समाज के उत्थान के लिए अच्छी तरह कार्य हो सकता है, क्योंकि एक स्थान पर चार–पाँच महीने रहना होता हैं मैं तो साधुओं से अनुरोध करूँगा कि जहाँ–जहाँ वे चातुर्मास करें, वहाँ–वहाँ सभी समाज में अपना पक्ष छोड़कर स्वाध्याय की स्वस्थ परम्परा डाले उन्हें आगम प्रणीत ग्रन्थों के स्वाध्याय का ऐसा आनंद दिला दें जिससे उन पाँच महीनों में वहाँ एक गोष्ठी जम जाये और वहाँ 25–40 लोग नियमित रूप से अच्छे ग्रन्थों का स्वाध्याय करने लगें। यदि चातुर्मास में एक–एक गाँव एक–एक शहर को एक–एक साधु ने ठीक किया तो मैं देखता हूँ आज कल दो–चार सौ स्थानों पर प्रतिवर्ष चातुर्मास होते हैं अगर सभी साधु ये कर ले तो समझता हूँ कि दो–पाँच साल में पूरा हिन्दुस्तान ज्ञानी बन जायेगा, परन्तु इतना जरूर है साधुओं को चाहिए कि पहले अपने शिथिलाचार के अनुसार पुष्ट न करके आगम के अनुसार पढ़ायी करायें एवं करने की प्रेरणा दें।

पं. विनोद – आज युवा वर्ग ऐसे चौराहे पर खड़ा हैं, जो ये नहीं सोच पाता कि उन्हें कहाँ जाना है उन्हें आपका क्या संदेश हैं?

श्री बैनाड़ा जी – यदि युवाओं को मार्ग पर लाना है तो सबसे पहले उनके माता–पिता को मार्ग पर आ जाना चाहिए, क्योंकि बच्चे सबसे पहले माता–पिता को देखते हैं। वर्तमान में युवाओं से ये ही कहना है कि आपको जैन धर्म का गौरव होना चाहिए। ये मत भूलिए कि आप मात्र एक छात्र हैं। आप ये सोचिये कि आप एक महान जैन कुल में उत्पन्न हुए हैं। सी.ए., एम.बी.ए. बने लेकिन उसके साथ अपने धार्मिक संस्कारों को न छोड़े। अपने मूल को न भूलें, ये भावना हैं।

व्हाट्स–एप से प्राप्त श्रद्धा–सुमन

जैन जगत् के मूर्धन्य मनीषी, सरस्वती और लक्ष्मी के वरद पुत्र महामना पंडित रतनलाल जी बैनाड़ा के देहावसान से संपूर्ण विद्वज्जगत् अपने संरक्षक का यह चिर वियोग अत्यंत द्रवीभूत हृदय से स्वीकार कर रहा है, आपका योगदान युगों–युगों तक स्मरणीय रहेगा। दुःख की इस बेला में जैन बौद्ध दर्शन विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय अपनी विनम्र श्रद्धांजलि प्रेषित करता है।

प्रो अशोक कुमार जैन **प्रो प्रद्युम्न शाह सिंह** **डॉ आनंद कुमार जैन**

जैन–बौद्ध दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

आदरणीय बड़े पंडित जी पं. रतनलाल जी बैनाडा के आकस्मिक निधन पर दिवंगत आत्मा के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि। आप शीघ्र ही पंचम गति को प्राप्त हों, ऐसी मंगल भावना करते हैं।

जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के संकाय सदस्य, शोधार्थीगण एवं समस्त विद्यार्थियों सहित सम्पूर्ण जैन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।

प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन **डॉ. ज्योति बाबू जैन** **डॉ. सुमत कुमार जैन**

(विभागाध्यक्ष) (सहायक आचार्य) (सहायक आचार्य)

एवं समस्त जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय परिवार, उदयपुर

विद्वत परंपरा के एक युग का समापन

श्रद्धेय पंडित एवं श्रेष्ठी श्री रतनलाल जी बैनाड़ा का देहावसान दिगंबर जैन समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है। आपने जीवन भर माँ जिनवाणी का प्रचार–प्रसार कर अपने जीवन को आदर्श रूप में स्थापित किया था। आप मुनि भक्ति, जिनशासन प्रभावक, सरलता, सादगी, अडिग एवं अगाध श्रद्धालु होने के साथ माँ जिनवाणी के गूढ़ रहस्यों को सरलता से विश्लेषित करने वाले विरले विद्वान् थे। हजारों श्रावक–श्राविकाओं के जीवन को प्रभावित करने वाले सुधी विद्वान् श्री बैनाड़ा जी के प्रति अ.भा. दिग. जैन शास्त्रि–परिषद् के सभी विद्वान् श्रद्धावनत् होकर आपके परिवार के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करते हैं।

– अध्यक्ष – – महामंत्री – – उपाध्यक्ष –

डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत **ब्र. जय कुमार निशांत** **डॉ. वृषभप्रसाद जैन, लखनऊ**

– कोषाध्यक्ष – – संयुक्त मंत्री– **डॉ. सुशील कुमार जैन, मैनपुरी**

पं. सुकमाल चंद्र, सहारनपुर **पं. विनोद कुमार जैन, रजवाँस** **डॉ. कमल कुमार जैन, पुणे**

डॉ कमलेश जैन, जयपुर **डॉ. धर्मचंद जैन, कुरुक्षेत्र**

प्रचार मंत्री – **डॉ. अमित जैन आकाश, वाराणसी**

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य तथा सदस्य विद्वत्जन

जैनागम का दैदीप्यमान नक्षत्र अस्त हो गया

जैन सिद्धान्त के प्रकाण्ड विद्वान, करणानुयोग के कुशल मर्मज्ञ, श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के अधिष्ठाता, लक्ष्मी एवं सरस्वती का समान रूप से आशीर्वाद प्राप्त, परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम भक्त, आगरा निवासी, विद्वत् श्रेष्ठ पं. रतनलाल जी बैनाड़ा का समाधि भावना सहित देहावसान हो गया । आपने आधुनिक साधनों का उपयोग करके युवाओं में स्वाध्याय के प्रति अभिरुचि जागृत करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है । आपके वियोग से जैन विद्वत् समुदाय की अपार क्षति हुई है । आप सदैव अपनी यशरूप स्मृतियों द्वारा समाज और युवा वर्ग का मार्गदर्शन करते रहेंगे। तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण उनकी ''स्मृति शेष'' आत्मा को भावभीनी विनयांजलि समर्पित करते हुए, उनकी उत्तम गति की मंगलकामना करते हैं ।

अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
पं. खेम चन्द जैन	**डॉ. अनुपम जैन**	**पं. विजय कुमार जैन**	**पं. चन्द्रप्रकाश जैन 'चन्दर'**
जबलपुर	इन्दौर	हस्तिनापुर	ग्वालियर

समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ

••

जैनधर्म के प्रचार–प्रसार एवं स्वाध्याय के माध्यम से ज्ञान दान में विगत तीन दशकों से संलग्न, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के संरक्षक, श्रमण संस्कृति संस्थान के अधिष्ठाता, परम गुरु भक्त श्रीमान् पंडित रतनलाल जी बैनाड़ा के समाधिभावना पूर्वक हुए निधन पर हम सब हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं. वे अपने व्यवहार, निष्ठा , गुरु भक्ति एवं आत्मीयता के लिए सदा याद किये जाते रहेंगे।

शोकाकुल परिजनों के प्रति हमारी संवेदना है।

प्रो.रमेशचन्द जैन	प्रो. अशोक कुमार जैन	प्रो. नरेन्द्र कुमार जैन	डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन
नयी दिल्ली	वाराणसी	सनावद	बुरहानपुर

(महामन्त्री – अ.भा. दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद्)

••

आदरणीय बड़े पंडित जी पं. रतनलाल जी बैनाडा के आकस्मिक निधन पर दिवंगत आत्मा के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि। आप शीघ्र ही पंचम गति को प्राप्त हों, ऐसी मंगल भावना करते हैं।

भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी के सभी पदाधिकारी एवं सदस्यों सहित सम्पूर्ण जैन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।

प्रो. प्रेम सुमन जैन (अध्यक्ष) **प्रो. जिनेन्द्र जैन** (महामन्त्री)

एवं भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी परिवार, उदयपुर

••

परम श्रद्धेय अनन्य आदरणीय निकट भव्य पंडित श्री रतनलाल जी बैनाड़ा निवासी आगरा, हाल मुकाम सांगानेर जयपुर का आकस्मिक निधन सुनकर हमारे लिए तो अनभ्र वज्रपात ही हो गया। कल सुबह 8.24 बजे पर तो हमारी पंडितजी से बात हुई थी। उन्होंने कहा था कि कल हॉस्पीटल से छुट्टी हो जाएगी आज 12 दिन हो गए हैं। कल्पना भी नहीं थी कि पंडित जी ऐसे चले जाएंगे। करीब साढ़े तीन दशक से हमारा धार्मिक सम्बन्ध रहा है।

ऐसे महापुरुष की क्षतिपूर्ति कोई नहीं कर सकता। हम जिनेन्द्र देव के चरणों में खड़े होकर यह भावना भाते हैं कि इस महान आत्मा को सद्गति की प्राप्ति हो एवं कुछ ही भवों में मोक्ष सिधारें।

शुभास्ते पन्धानः। **जवाहरलाल सिद्धान्त शास्त्री एवं कैलाश जैन**

46, सर्वऋतु विलास, उदयपुर

••

विद्वान् एवं श्रेष्ठी पंडित श्री रतनलाल बैनाड़ा के निधन से जैन विद्वत् जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। पंडितजी के साथ लगभग 25 वर्षों तक कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके जीवन से बहुत कुछ सीखने को भी मिला। पंडितजी करणानुयोग के उच्चकोटी के विद्वान होने के साथ–साथ अपने सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ थे। आपने जिनवाणी के प्रचार–प्रसार में अपूर्ण योगदान दिया हैं। आपके जाने से श्रमण संस्कृति संस्थान के साथ–साथ सम्पूर्ण जैन समाज को भी क्षति हुई है। ऐसी दुःख की घड़ी में वीर प्रभु से कामना करता हूँ कि उनके परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

डॉ. शीतलचन्द जैन

निदेशक–श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर, जयपुर

••

जैन दर्शन एवं सिद्धान्त के उद्भट विद्वान्, मां सरस्वती के वरद पुत्र, करणानुयोग के मर्मज्ञ मनीषी, श्रुत संरक्षण के लिए कृत संकल्पित व्यक्तित्व, श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर के अधिष्ठाता एवं संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज के परम भक्त विद्वत् रत्न पं. रतन लाल जी बैनाड़ा का समाधि की भावना पूर्वक देह परिवर्तन हो गया। आपका जीवन ज्ञान पिपासुओं और स्वाध्याय प्रेमियों को सदैव प्रेरणा देता रहेगा। उनके प्रयाण से जैन विद्वत् समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

शास्त्रि परिषद् ऐसी दिव्य आत्मा को अपनी विनयांजलि समर्पित करती है। मैं भी अपनी और अपने परिवार की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, अध्यक्ष

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद्

••

बहुत अधिक पीड़ा हुई। ऐसा सन्त चला गया जो विद्वान् होने के साथ आचारवान तथा त्यागी भी था। इधर वे पारस चेनल पर द्रव्य संग्रह, तत्त्वार्थ सूत्र तथा रत्नकरण्ड श्रावकाचार पढ़ा रहे थे पाठशाला कार्यक्रम में, मैं भी पूरे समय सपत्नीक सुनता था। पूर्व पठित होने पर भी नवीन जानकारी मिलती थी। आगम की बारीकियों की अच्छी जानकारी थी। मैंने आपके घर पर आतिथ्य पाया है। आचार्य श्री के परम भक्त थे। समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। आपको सद्गति प्राप्त हो तथा उनके परिवार के साथ हम सभी को भी उनके अभाव को सहने की सामर्थ्य प्राप्त हो, ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

डॉ. सुदर्शन जैन भोपाल
पूर्व अध्यक्ष तथा डीन–संस्कृत विभाग, बी.एच.यू.वाराणसी

••

जैन धर्म–दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान्, जैन समाज की अमूल्य धरोहर माँ जिनवाणी के अनन्य समाराधक आदरणीय श्रीमान रतनलाल जी बैनाड़ा के आकस्मिक परलोक गमन का समाचार जानकर पूरे परिवार के साथ मैं स्तब्ध हूँ। वे लक्ष्मी और सरस्वती के एक साथ कृपापात्र रहे हैं। श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर के अधिष्ठाता तथा श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद् के संरक्षक के रूप में उन्होंने जो जिन धर्मियों, जैन विद्वानों एवं स्वाध्यायी जनों को मार्गदर्शन दिया है, वह न केवल प्रशंसनीय है अपितु अनुकरणीय भी है। पांच सौ से भी अधिक उनके अन्तेवासी शिष्य आज सम्पूर्ण देश में उनकी यशोपताका फहरा रहे हैं। इस समय करणानुयोग के विद्वानों में वे अंगुलीगण्य लोगों में भी कनिष्ठिकाधिष्ठित रहे हैं पाठशाला के गुरुजी एवं बोलती जिनवाणी के नाम से उनकी ख्याति दिग्दिगन्त में व्याप्त है। धार्मिक शिविरों की सफल आयोजना से सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपूर्व जागृति आई है तथा नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना हुई है। ऐसे ज्ञानरवि के अस्त हो जाने से मैं अपने पूरे परिवार के साथ अत्यन्त दुःखी हूँ।

निश्चित तौर पर उन्हें सुकृत के फलस्वरूप सद्गति प्राप्त हुई है। भविष्य में उन्हें पंचमगति मुक्ति की प्राप्ति हो, ऐसी उस भव्यात्मा के प्रति हार्दिक भावना है। आपका पूरा परिवार विद्वान् है, फिर भी अपनों का वियोग व्यथित तो करता ही है। वीर प्रभु से प्रार्थना है कि आपके पूरे परिवार को इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

जयकुमार जैन
उपाधिष्ठाता–श्री श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर
पूर्व महामंत्री–अ.भा.दिग.जैन शास्त्रि–परिषद्

••

परम आदरणीय श्री बैनाड़ा जी के अप्रतिम योगदान को याद किया जाता रहेगा। मैं उन्हें सादर श्रध्दा सुमन अर्पित करते हुए उनके अभ्युदय की कामना करता हूँ। वे भव भ्रमण से मुक्त होने का अवसर पाकर कृतार्थ हों, यह भावना है। **–प्रोफेसर श्रीयांश कुमार सिंघई** जयपुर

••

7 जुलाई 1942 को पं. मिश्रीलाल जी बैनाड़ा के परिवार में बयाना (भरतपुर) में जन्मे श्री रतनलाल जी बैनाड़ा 5 भाई थे। श्री निरंजनलाल, श्री रतनलाल, श्री पन्नालाल एवं श्री मदनलालजी सभी कुशल उद्योगपति रहे। अपनी उद्यामिता के आधार पर धनार्जन कर समाज में श्रेष्ठि के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित करने वाले श्रीयुत पं. रतनलाल जी ने 1992 तक व्यापार किया पश्चात् स्वाध्याय की ओर उन्मुख हो गये। पूज्य मुनि श्री सुधासागरजी महाराज के आगरा वर्षायोग के उपरान्त आप पूज्य मुनि श्री के संपर्क में आये एवं 1997 से सतत श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर (सांगानेर विद्यालय) को अपनी सेवाएं प्रदान करते रहे। आपके समर्पण से विगत 24–25 वर्षों में मुनिभक्त विद्वानों की पूरी पीढ़ी तैयार हुई है।

वे युवा विद्वानों को अत्यन्त स्नेहपूर्वक शास्त्र स्वाध्याय कराते थे। फलतः उनके सभी शिष्य उनका सदैव बहुमान करते हैं। स्वाध्याय की प्रवृत्ति को गति देने एवं उसे एक निश्चित दिशा देने में उनकी अग्रणी भूमिका रही है। विद्वानों में मतभेद होना स्वाभाविक है क्योंकि विद्वान कोई केवली नहीं है। मतभेद होने पर भी पंडितजी ने कभी भी मनभेद नहीं होने दिये। वे सभी के प्रति आत्मीय भाव एवं साधर्मी वात्सल्य रखते थे। 16 अगस्त 2020 को प्रातः संक्षिप्त बीमारी के बाद निधन से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

मैं व्यक्तिशः एवं कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ की ओर से दिवंगत आत्मा की शीघ्र मुक्ति एवं आपके निधन से शोक संतप्त परिवार हेतु धैर्य की कामना करता हूँ। **डॉ. अनुपम जैन,** सदस्य–निदेशक मण्डल
कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर

सुनने को रतन देशना , हम सब खड़े हुए थे।
आप ही सो गए, जिनवाणी कहते कहते।।

तत्त्वज्ञान मर्मज्ञ, पंडित शिरोमणि, चारित्र निष्ठ, सहज सरल व्यक्तित्व के धनी आदरणीय पंडित रतनलाल बैनाड़ा जी के अकस्मात् वियोग से हम सभी स्तब्ध हैं । अपने स्वाध्याय शील और संयमित जीवन से हम सभी जिनवाणी सेवकों को एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करने वाले आदरणीय पंडित जी को हार्दिक श्रद्धांजलि । **प्रो अनेकान्त कुमार जैन,** दिल्ली

विनम्र श्रद्धांजलि, अत्यंत दुःख हुआ जब पं. रतनलाल जी बैनाड़ा के देव गमन का समाचार सुना अपूरणीय क्षति की भरपाई होना असंभव सा लगता है। वे जैन–दर्शन के मूर्धन्य विद्वान थे। माँ सरस्वती के वरद पुत्र थे, उन्होंने जिनवाणी की निस्वार्थ सेवा कि जिसका कोई सानी नहीं था, पर नियति को यही मंजूर था, भगवान महावीर ने भी कहा है, मृत्यु के आने के अनेक मार्ग हैं, निमित्त हैं और वह अतिथि है शोक की जगह अशोक होकर उनके अधूरे कार्य किए जाएं यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पं. सुखदेव जैन, सागर

जैन जगत् के मूर्धन्य विद्वान, सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति आदरणीय पंडित रतनलाल बैनाड़ा का अवसान निश्चित ही जैन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।

जिनभाषित पत्रिका, भोपाल के प्रकाशन में आपका महनीय योगदान रहा। उक्त पत्रिका में आपके द्वारा संचालित जिज्ञासा–समाधान कालम के माध्यम से श्रावकों की जिज्ञासाओं का समाधान आगमोक्त दिया जाता, जिससे सभी सुधी पाठक लाभान्वित हुए।

आदरणीय बैनाड़ा जी का अनेक बार मुझे सान्निध्य मिला। उनके साथ व्यतीत क्षणों को याद कर मन प्रफुल्लित हो उठता है। निराभिमानी, सहृदय, निर्भीक, जिनवाणी साधक विद्वत्वर को विनम्र प्रणाम।

सांधेलीय परिवार पाटन, सकल दिगम्बर जैन समाज पाटन, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कुण्डल गिरी (कोनीजी) की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि। **अभिनंदन सांधेलीय, पत्रकार**

पाटन–(जबलपुर)–मध्यप्रदेश

जैन–धर्म, दर्शन के उद्भट विद्वान् , मॉ सरस्वती के वरद पुत्र , जिनवाणी के प्रति निःस्वार्व समर्पित ,श्रवण संसकृति संस्थान के अधिष्ठाता श्रद्धेय विद्वान् एवं श्रेष्ठी पंडित श्री रतनलाल जी बैनाड़ा के निधन से जैन विद्वत् जगत् को अपूरणीय क्षति हुई है । श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय परिवार आपको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है ।

प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार जैन

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय संगानेर जयपुर

परम आदरणीय श्री बैनाड़ा जी के स्वर्गवास के समाचार से दुःख हुआ। विद्वत् जगत् की अपूरणीय क्षति है। ज्ञान बाटने हेतु उन्होंने अपनी शक्ति से अधिक कार्य किया। आगरा उनके निवास व अन्य स्थानों पर कई बार भेंट हुई। ज्ञान देने वाला एक दीपक बुझ गया। कर्म की बड़ी विचित्रता है।

हार्दिक श्रद्धांजलि। **डॉ. सुशीलचन्द्र जैन,** मैनपुरी

परम मुनि भक्त, सदाचारी व्यक्तित्व के धनी, स्वाध्यायी, देव–शास्त्र–गुरु को समर्पित श्री पं रत्न लाल जी बैनाड़ा के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर हृदयाघात लगा। नियति के सामने हम असहाय हैं। दिवंगत आत्मा को सद्गति प्राप्त हो, ऐसी सद्भावना युक्त विनम्र श्रद्धांजलि।

पं. जयन्त कुमार जैन, सीकर

पं. श्री बैनाड़ा जी, जैन विद्या के निष्णात मनीषी रहे हैं, उनका जाना मानो जिनवाणी की गोद सूनी हो गई हो, मां भारती का प्रचार–प्रसार थम सा गया हो, आज सारी दुनिया की जैन समाज में व विद्वत् जगत् में सूनापन सा हो गया। मुझे ऐसे जैन दर्शन के तलस्पर्शी अध्येता से दो–तीन बार तत्त्व चर्चा करने का अवसर मिला उनके पास बैठने से लगा कि मैं मां जिनवाणी के पास बैठा हूं। आपकी शैली में गंभीरता के साथ–साथ स्पष्टता भी थी जो विषय प्रतिपादन को अधिक सुरुचिपूर्ण और ग्राह बना देती थी। जब–जब भी जैन दर्शन में गहन विषय की चर्चा होगी आप हमेशा याद किए जाएंगे। हार्दिक श्रद्धांजलि।

डॉ आनंद प्रकाश शास्त्री
कोलकाता

परम श्रद्धेय श्रेष्ठी पंडित श्री रतनलाल बैनाड़ा जी के आकस्मिक निधन से संपूर्ण समाज स्तब्ध है। उनके जाने से समाज के साथ–साथ विद्वत् परंपरा को भी एक बहुत बड़ी हानि हुई है जिसकी पूर्ति वर्तमान में होना संभव नहीं है। वह एक मुनि भक्त संयमी विद्वान् थे। उनका चारों अनुयोगों पर अच्छा अधिकार था। उन्होंने शिविरों के माध्यम से जिनवाणी का बहुत प्रचार–प्रसार किया। निकट भविष्य में उनकी पूर्ति करना संभव नहीं दिख रहा है। मैं श्री गोपाल दिगंबर जैन सिद्धांत संस्कृत महाविद्यालय मुरैना परिवार की ओर से उनके प्रति सविनय नमन करते हुए श्रद्धा सुमन समर्पित करता हूँ।

डॉ हरीश चंद्र शास्त्री, मुरैना

आदरणीय पंडित जी पं. रतनलाल जी बैनाडा को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

पं. महेन्द्रकुमार जैन शास्त्री
पूर्व प्राचार्य, मुरैना

जिनवाणी के प्रति समर्पित, स्वाध्याय शील और संयममय जीवन के धनी आदरणीय पंडित जी साहब को सादर श्रद्धांजलि।

डॉ ज्योति जैन, खतौली

आदरणीय बड़े पंडित जी पं. रतनलाल जी बैनाड़ा के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि, आप शीघ्र ही पंचम गति को प्राप्त हों ऐसी मंगल भावना करते हैं।

हम सभी के लिए एवं सम्पूर्ण जैन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।

डॉ ज्योति बाबू शास्त्री, परिवार उदयपुर

आदरणीय पं. रतनलाल जी बैनाड़ा के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि, निश्चित ही उनका देवलोक गमन हुआ होगा, शीघ्र ही पंचम गति प्राप्त हो, ऐसी भावना है। **पं. सुकुमाल जैन,** सहारनपुर

देश के जैन दर्शन के उद्भट विद्वान्, हमारे मार्गदर्शक, गहन चिंतक मनीषी, आदरणीय पं. रतनलाल जी बैनाड़ा का आकस्मिक निधन होने से जैन धर्म की महान क्षति हुई है।

निश्चित ही उनकी सद्गति हुई होगी। पूरा जैन समाज, विद्वत् समाज शोक संतप्त है। उनके वात्सल्य, उनकी विनय, अद्भुत थी, दुःखद विनम्र श्रद्धांजलि !!!

पं. राजकुमार शास्त्री, सागर

आदरणीय बैनाड़ा जी जैन जगत् की शान थे, जिन्होंने धर्म के मर्म को निःस्वार्थ भाव से जन–जन तक पहुँचाकर अभूतपूर्व उपकार किया है, जो चिरस्मरणीय है, हम उनके प्रति विनम्र अश्रुपूरित श्रद्धांजली समर्पित करते हैं। **पं उदयचन्द्र जैन शास्त्री,** सागर

पं.रतनलाल बैनाड़ा जी के स्वर्गवास के समाचार से मन बहुत दुःखी है। उनके जैसा स्वाध्यायी सदाचारी सरल और विनम्र गुरुभक्त व्यक्तित्व पुनः मिलना दुर्लभ है। वे हमारी स्मृतियों में सदा रहेंगे।

डॉ. पंकज जैन, भोपाल

हम सबके परम आदरणीय गुरुजी पंडित श्री रतनलाल जी बैनाड़ा जिन्होंने हम सबको जैन धर्म के मूल तत्त्वों से परिचित करवाया और जो एक महान ऐतिहासिक सत्पुरुष थे। आज हमारे बीच नहीं रहे ऐसे महापुरुष सदियों में एक बार ही जनकल्याण लिए आते हैं। हम उनके अंतिम दर्शन नहीं कर पाए सद्भावना भाते हैं कि वह परंपरा से मोक्ष को प्राप्त करें। **पं. मयंक जैन**

पं. रतनलालजी साहिब का निधन पूरे भारतवर्ष के जैन समाज के लिये बहुत बड़ी क्षति है, समाज व साधुओं को आगम व शास्त्रों की जानकारी व शंकाओं का सही व सटीक समाधान देते थे, जैनधर्म का विश्वस्तर पर ज्ञान का प्रसार करने में भी संलग्न थे, सादा व सरलता से जीवन जीना उनका उद्धेश्य था, उनका असामयिक निधन हम सब को आहत कर गया, हम सभी अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, प्रभु से उनकी सद्गति हेतु व उनकी आत्मा के कल्याण के लिये प्रार्थना करते हैं।

डॉ. आशीष बम्हौरी

आदरणीय बड़े पंडित जी पं. रतनलाल जी बैनाडा के आकस्मिक निधन पर दिवंगत आत्मा के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि। सम्पूर्ण जैन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।

पं. शैलेन्द्र शास्त्री, भेलसी

••

परम श्रद्धेय पंडित श्री रतनलाल जी बैनाड़ा के आकस्मिक निधन का समाचार पाकर हम सभी स्तब्ध हैं। बैनाड़ा जी के चलें जाने से सम्पूर्ण जैन समाज और विशेष रूप से विद्वत् समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। हमने करणानुयोग के बेमिशाल निर्भीक अप्रतिम प्रतिभावान विद्वान् को खो दिया है। उनके असमय चले जाने से एक युग का अन्त हो गया है। उन्होंने ज्ञान के प्रचार–प्रसार में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। मुझे व्यक्तिगत रूप से उनके साथ लगभग एक साल रहने और अनेक शिविरों में साथ काम करने का अवसर मिला। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को चिर शांति और शीघ्र अभ्युदय की प्राप्ति हो यही कामना करता हूँ।

पं प्रद्युम्न कुमार जैन शास्त्री, जयपुर

••

जिनवाणी उपासक, करणानुयोग के मर्मज्ञ, स्वाध्याय प्रेमी, श्रुतसंरक्षक, संवर्धक, कुशल शिक्षक, श्रेष्ठ प्रवचनकार, श्रमण संस्कृति संस्थान के संस्थापक अधिष्ठाता, जिज्ञासाओं के प्रमाणित समाधान कर्ता शिक्षण शिविर एवं पाठशाला के गुरुजी पंडित प्रवर रतनलाल जैन बैनाड़ा के देहावसान से जैन जगत् अपने आप को अधूरा सा मानने लगा है। आपकी जीवनशैली, गुरु भक्ति, दृढ़श्रद्धान, अपार ज्ञान का क्षयोपशम एवं शिष्यों के प्रति वात्सल्य भाव, मानव जीवन का आदर्श विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शन एवं स्वाध्याय प्रेमियों को प्रेरणा देता रहेगा हम आपके प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए आपकी सद्गति की कामना करते हैं।

पंडित सनतकुमार विनोदकुमार जैन, रजवाँस इंदौर (म.प्र.)

••

श्रद्धेय रतनलाल जी बैनाडा के अप्रत्याशित निधन से स्तब्ध हूँ। उन्हें अवश्य सद्गति प्राप्त हुई होगी। हमारे उन्हें श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।

डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन
अध्यक्ष, समयांकन संस्थान, टीकमगढ़

••

आदरणीय रतनलाल बैनाड़ा साहब के आकस्मिक निधन से सुबह से ही मन व्यथित हो रहा है। उनको आगामी भवों में पंचम गति प्राप्त हो ऐसी मंगल भावना करता हूँ।

डॉ. सतेन्द्रकुमार जैन एवं डॉ. दर्शना जैन सपरिवार

••

शतेषु जायते शूरः सहस्रेषु च पण्डितः ।
वक्ता दशसहस्रेषु दाता भवति वा न वा।।

सैकड़ों में कोई एक शूर वीर होता है, हजारों में कोई एक विद्वान् होता है, दस हजार में कोई एक वक्ता होता है और ज्ञानदाता कोई विरला ही होता है अथवा होता ही नहीं है।

जैनधर्म के प्रकाण्ड विद्वान् जिनवाणी उपासक, परम गुरु भक्त, आदरणीय पंडित रतनलाल जी बैनाडा सा. सादगी व सरलता के सच्चे प्रतीक थे, आपने अपनी मधुर वाणी से शिविर व टी.वी. चेनलों के माध्यम से जो जन – जन तक ज्ञानाराधना कराई है वह अमिट व ज्ञानपिपासुओं के लिए अमृत–सम है। लक्ष्मी व सरस्वती के धनी पंडित जी ने जीवन के 25 वर्ष सांगानेर संस्थान को अधिष्ठाता के रूप में देकर अनेक छात्र–विद्वान् तैयार किए है, जो आगामी समय में आपके उपकरों का स्मरण करते हुए जिनवाणी का प्रचार प्रसार करते रहेंगें,और आपको अपने संस्मरणों में याद करते रहेंगे।

आज भी मुझे आपके श्री मुख से सांगानेर संस्थान में प्रति रविवार आयोजित होने वाला शंका–समाधान याद है, जो सभी की शंकाओं का सटीक विश्लेषण व आगमिक समाधान होता था। धर्म पिता के रूप में हम सभी छात्रों को जो असीम स्नेह व वात्सल्य के साथ तत्त्व ज्ञान प्राप्त हुआ है, वह चिरस्थायी है। वर्तमान समय में आबाल वृद्ध सभी में वे अत्यंत लोकप्रिय जैन विद्वान् थे।

उनके वियोग से सम्पूर्ण जैन समाज व विद्वत् संवर्ग के लिए अपूरणीय क्षति है। जिसको आगामी समय में कभी पूरा नहीं किया जा सकता। अश्रुपूरित सादर नमन।

पं. राजेश जैन शास्त्री, ललितपुर

आदरणीय बड़े पंडित जी का जीवन जैनधर्म की प्रभावना के लिए समर्पित था। उन्होंने जैन धर्म की आराधना के लिए अनेक विद्वान तैयार किये। शिविर आदि के माध्यम से अभी तक का सर्वश्रेष्ठ प्रभावना का पुरुषार्थ किया। सद्गति और शीघ्र कल्याण की भावना सहित... ॐ शान्ति

डॉ. पुलक गोयल, जबलपुर

परम श्रद्धेय आदरणीय पंडित रतनलाल जी बैनाड़ा के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर स्तब्ध हूँ। संपूर्ण जैन जगत् के अप्रतिम प्रतिभावान विद्वान् का अचानक चले जाना विद्वत् जगत् एवं जैन जगत् की अपूरणीय क्षति है। वीर प्रभु से भावना भाता हूँ कि ऐसी महान आत्मा को सद्गति प्राप्त हो एवं शोक संतप्त परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। **डॉ. भरतकुमार शास्त्री,** इन्दौर

अखिल जैन जगत् के मूर्धन्य, नरपुंगव, विद्वत्वर्य श्रेष्ठि पं. श्री रतनलाल जी जैन बैनाड़ा–आगरा अंतर्राष्ट्रीय स्वाध्याय शील, वय–ज्ञान वृद्ध, श्रेष्ठ मनीषी थे।

महाकवि पं. बनारसीदास जी (मोती कटरा) कविवर श्री बुलाकीदास जी, कवि भैया भगवती दास जी, कवि पं. भूधरदास जी, कविवर पं. द्यानतरायजी, श्री नथमलजी बिलाला, पं. श्री जगमोहनदासजी, पं. श्री भूधरदास जी मिश्र, पं. श्री केवलचंदजी आदि ये सब आगरा के रत्न थे। इसी श्रंखला में स्वनामधन्य पं. श्री रतनलाल बैनाड़ा ने आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शुभाशीष एवं मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी के शुभाशीर्वाद/प्रेरणा से श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर को समर्पित होकर नवोदित विद्वानों के द्वारा जो सम्यग्ज्ञान की ज्योति जलाई है। वह सदियों पर्यन्त प्रज्जवलित रहेगी।

बैनाड़ा परिवार के कुल–संस्कार, धर्म शिक्षा गुरु पं. श्री हुकमचंद जी वैद्य ने आप सहित सम्पूर्ण बैनाड़ा परिवार को सुसंस्कारित किया। मैं भी सन् 1983 से स्याद्वाद शिक्षण शिविर के माध्यम से इस परिवार से जुड़ा। सांगानेर संस्थान के प्रारंभ काल से लगभग साढ़े तीन वर्ष की सेवाएं व्याख्याता रूप में देने का सुअवसर मुझे मिला–संरक्षण दिया। उसके पश्चात् हमारी श्रुत स्पर्या की वे सदैव सराहना करते थे। सादा जीवन उच्च विचार उनकी जीवनशैली थी। ऐसे जिनवाणी के अमर सपूत परमगुरु भक्त श्री बैनाड़ाजी को श्री दिगम्बर जैन सन्मति साहित्य प्रकाशन समिति परिवार एवं सम्पूर्ण दीवान परिवार की ओर से अपने श्रद्धा सुमन समर्पित करता हूँ। वे यथा शीघ्र भवान्तर में सिद्धशिला वासी बनें।

प्रतिष्ठाचार्य पं. पवनकुमार जैन दीवान

मुरैना (म.प्र.)

राजस्थान के बयाना नगर से उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में व्यवसाय के क्षेत्र में अपनी अनूठी छाप बनाने के साथ–साथ अपने पूज्य माता–पिता के संस्कारों से अभिसिंचित परम् आदरणीय मुझे शिष्यवत वात्सल्य प्रदान करने वाले मूर्धन्य विद्वान श्री रतनलाल जी बैनाड़ा ने अपने सादगी से पूर्ण जीवन को आत्मोन्नति के पथ की ओर अग्रसर किया। सच्चे देव–शास्त्र–गुरु के प्रति अकाट्य आस्थावान रहकर जीवन के अनेक पहलुओं को समाज के समक्ष रखा सम्पूर्ण विश्व को अपने वात्सल्यमयी ज्ञान गंगा से तिरोहित करने का सत्पुरुषार्थ किया आपकी भव्य आत्मा ऐसे सन्त की चरण चंचरीक रही जिनको आज 'सम्पूर्ण विश्व अपने हृदय पटल पर विराजित रखता है।

आपके जीवन के आदर्श व पाठशाला निरन्तर समाज को आपकी याद दिलाती रहेगी।

पंडित मुकेश जैन 'मधुर' शास्त्री

श्री महावीर जी

श्रद्धांजलि पंचक

पं. सुनील 'सुधाकर' शास्त्री
द्रोणगिरि

(1) **ज्ञानाधारदयादिभावसहितं, संस्कारसंवर्द्धकं,**
श्रद्धाशीलविवेककर्मनिपुणं, धर्मोपदेशे–पटुं।
सांगानेरपवित्रतीर्थनिकटे, संस्थानसंचालकं,
वैनाडारतनाख्यविज्ञपुरुषं, श्रद्धांजलिःसादरम्।।

पद्यानुवाद– ज्ञानाधर दयादि भावयुत, संस्कार संवर्धक आप,
श्रद्धाशील विवेक कर्म में, निपुण धर्म उपदेशक व्याप्त।
सांगानेर सुज्ञान तीर्थ पर, पावन गुरुकुल के आयुक्त,
रतनलाल बैनाड़ा गुरु को, अर्पित हैं श्रद्धा के पुष्प।।

(2) **विद्यासागरपादमूलमहितं, पारंगतंदेहतः,**
भेदज्ञानमधीतवान्हिगुरुणा, संवेगसंपुष्ठितं।
सम्यग्ज्ञानकठोरदण्डविधिना, मोहांधसंहारकं,
बैनाड़ारतनाख्यविज्ञपुरुषं, श्रद्धांजलिः सादरम्।।

पद्यानुवाद– विद्यागुरु के पादमूल की, भक्ति सहित जीवन अवसान,
भेदज्ञान सीखा गुरुवर से, पुष्ट किया संवेग महान।
सम्यग्ज्ञान कठोर दंड से, मोहभाव को किया विक्षुब्ध,
रतनलाल बैनाड़ा गुरु को, अर्पित हैं श्रद्धा के पुष्प।।

(3) **जैनाचारविचारवाक्यसहितं, भावैःसदासंयुतं,**
वात्सल्येनविशेषरोषरहितं, साधूपमंजीवितं।
संस्कारेषुनियोज्यलक्षमधिकान्भव्यान्सदाश्रावकान्,
बैनाड़ारतनाख्यविज्ञपुरुषं, श्रद्धांजलिः सादरम्।।

पद्यानुवाद– जैनाचार विचार कर्मयुत, भावों से निशदिन संयुक्त,
वत्सलभाव विशिष्ट अक्रोधी, साधुवत जीवन से युक्त।
लाखों श्रावक भव्यजनों को, करने वाले आगमनिष्ठ,
रतनलाल बैनाड़ा गुरु को, अर्पित हैं श्रद्धा के पुष्प।।

(4) वाणीशास्त्रविशेषशिष्टविपुलां, मिथ्यात्वसंहारणीं,
श्रद्धातर्कसमाहितांहितमितां, शास्त्र–प्रमाणैःयुतां।
एकांतादिमतेषुतीक्ष्णछुरिकां, शंकादिकंहारिणीं,
बैनाड़ारतनाख्यविज्ञपुरुषं, श्रद्धांजलिः सादरम्।।

पद्यानुवाद– वाणी आगम निष्ठ शिष्ट है, मिथ्यामत की परिहारी,
श्रद्धा, तर्क सहित, मित, पावन, आगमसंमत हितकारी।
दुराग्रही एकांतमती को, पैनी छुरिका शंकामुक्त,
रतनलाल बैनाड़ा गुरु को, अर्पित हैं श्रद्धा के पुष्प।।

(5) छात्रावासमहीरुहस्यसरसं, मूलंहियः कल्पितः,
विद्यादानमहाविभूतिजनकः, मातापितेतिद्वयं,
शिक्षाधर्मपरंतपेतिनियतं, जीवन्तचिन्तामणिं
बैनाड़ारतनाख्यविज्ञपुरुषं, श्रद्धांजलिः सादरम्।।

पद्यानुवाद– छात्रावास विशाल वृक्ष की, जड़ तुम माने गये सदा,
विद्यामहा विभूति दाता, मातपिता हो गये विदा।
शिक्षा धर्म महातप माना, जीवित चिन्तामणि सदृश्य,
रतनलाल बैनाड़ा गुरु को, अर्पित हैं श्रद्धा के पुष्प।।

जिनस्तुतीयम्

प्रस्तुत कृति जिनस्तुतीयम् में 50 रचनाओं का समावेश किया गया है। इस संग्रह में प्रत्येक रचना का अर्थ तथा उसकी भूमिका भी दी गयी है। 16–20वीं शताब्दी के मूर्धन्य कवियों के द्वारा रचित रचनाओं को मेरे द्वारा संग्रह करके अनेक सुधी विद्वानों के सहयोग से अर्थ करवा कर समाज को यह कृति सौंपते हुए हर्ष हो रहा है।

आत्म–शुद्धि, आत्म–कल्याण एवं सिद्धत्व की प्राप्ति के लिए वीतराग देव की स्तुति, भक्ति की जाती है। इसके माध्यम से वीतरागी भगवान के स्वरूप का बोध होता है। गद्यात्मक कथन स्मृति में देर से आता है अपितु पद्यात्मक कथन कण्ठस्थ भी हो जाता है और स्मृति में भी शीघ्र आ जाता है। अतः स्तुतियॉ याद करके प्रतिदिन पाठ करने की परम्परा है। इस स्तुतियों को अर्थ सहित प्रकाशित करने का यही उद्देश्य है कि पाठक सच्चे देव–शास्त्र–गुरु के स्वरूप को समझकर सम्यक्त्व ग्रहण करें।

कृति का सम्पादन पं. सनत कुमार विनोद कुमार जैन, रजवांस ने किया है। पुस्तक का मूल्य 100/– रु. है। पृष्ठ संख्या 300 है।

प्राप्ति स्थान–धर्मोदय विद्यापीठ, ई–1, गीतांजली ग्रीन सिटी, संजय ड्राइव के पास, सागर–470002 (मध्यप्रदेश) मो.: 75829 86222

श्री शांतिनाथ विधान (गद्यार्थ)

श्री शांतिनाथ भगवान की पूजन, आराधना, भक्ति, स्तुति आदि अशुभ कर्मों को नष्ट करने वाली, विघ्नों को शांत करने वाली एवं सुख–समृद्धि प्रदान करने वाली होती है। श्री शांतिनाथ भगवान का विधान दोषों का शमन तो करता ही है साथ ही जाने–अनजाने में हो जाने वाले दोषों के प्रायश्चित स्वरूप यह विधान किया जाता है।

श्री शांतिदास प्रणीत संस्कृत शांतिनाथ विधान का पद्यानुवाद पं. श्री ताराचन्द्र जैन शास्त्री, रेवाड़ी ने किया है। यह विधान आज सम्पूर्ण भारतवर्ष में पूर्ण श्रद्धा–भक्ति से किया जाता है। पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन रजवांस जिनवाणी की सेवा समर्पित भाव से करते हैं, अतः उन्होंने इस कृति का गद्यार्थ करके जैन समाज के ऊपर महनीय उपकार किया है। मूल्य–20/– रु. है। पृष्ठ संख्या 64 है।

प्रकाशक – अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि–परिषद् एवं पं. श्री कपूरचन्द्र जैन स्मृति न्यास, रजवांस, सागर (मध्यप्रदेश) है।

प्राप्ति स्थान–डॉ. भरतकुमार जैन शास्त्री, 587, सेक्टर–ए, महालक्ष्मी नगर, इंदौर–45020 (म.प्र.) मो.: 94066 06491

अपनी हिन्दी – नागरी संवारिए

प्रस्तुत कृति अपनी हिन्दी–नागरी संवारिए प्रोफेसर वृषभ प्रसाद जैन लखनऊ के द्वारा अत्यधिक श्रमसाध्य कार्य किया गया। जो कार्य आजादी के 70 सालों में किसी ने नहीं किया, वह कार्य इस लॉकडाउन में उन्होंने भारतीय समाज को सौंप दिया। भारत की आजादी के बाद नागरी वर्णमाला के मानकीकरण का कार्य संवैधानिक रूप में भारत सरकार के द्वारा स्थापित केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नयीदिल्ली का है। प्रोफेसर साहब ने स्वयं वर्ष 2000 से 2001 के दौरान महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के अधीन स्थापित लखनऊ स्थित भाषा–केन्द्र में नागरी वर्तनी पर एक कार्यशाला बुलायी थी, जिस में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के उपनिदेशक स्तर तक के कई अधिकारियों ने भाग लिया था, पर उसमें लिये गए निर्णयों के आधार पर कुछ कार्यवाही निदेशालय के स्तर पर होनी थी और सुझाये गए सभी बिन्दुओं को नहीं, तो कम से कम कुछ बिन्दुओं को लेकर जरूर निदेशालय की ओर से उस उल्लेख के साथ नया संस्करण प्रकाशित होना चाहिए था, तथा उसके आधार पर कुछ विचार चर्चा आगे बढ़ायी जानी चाहिए थी जो अब तक नहीं हो सका। इस कृति में 71 बिन्दुओं में हिन्दी भाषा को कैसे हम व्यवस्थित लिख सकते हैं, जिसमें वर्तनी की त्रुटियां न हो। यह भली–भांति बताया गया है। प्रकाशक–भारतीय भाषा मंच, संस्कारम् 71, द्वितीय तल, रीगल बिल्डिंग, बाबा खडगसिंह मार्ग, नयीदिल्ली– 011–43536363, 98911 19696, मूल्य–20/– रु. पृष्ठ संख्या 32 है।

''श्री जिन नित नूतन अर्चन पुंज''

कृतिकार–सम्पादन–लेखन–प्रतिष्ठाचार्य पं. पवनकुमार जैन 'दीवान', मुरैना

पृष्ठ–364, न्यौछावर–150/– रुपये, प्रकाशन वर्ष–2019

प्राप्ति स्थान – श्री महावीर भवन, पीपलवाली माता, स्वामी स्कूल के पास, दत्तपुरा, मुरैना (म.प्र.)

मो.: 89894 81798, 79740 08330

प्रतिष्ठाचार्य पं. पवनकुमार जैन 'दीवान' द्वारा प्रस्तुत यह कृति जैन साहित्य जगत् के लिये तृतीय संस्करण रूप अद्वितीय कृति है। प्रस्तुत कृति में मंगलाष्टक, श्री जिन पूजा मुख विधि, प्रारंभिक शुद्धिकरण रूप क्रियायें, संस्कृत–हिन्दी, पूजन पीठिका, संस्कृत पद्यानुवाद सहित प्राचीन देव–शास्त्र–गुरु व विद्यमान 20 तीर्थंकर की संस्कृत पूजादि व समस्त अर्घ्य, शांतिपाठ–विसर्जनादि विधि प्रथम परिच्छेद में है। द्वितीय परिच्छेद में चतुर्विध श्रमण संघ–ब्र. त्यागी आदि द्वारा एवं तृतीय परिच्छेद में प्राचीन–अर्वाचीन विद्वान, कवि/कवित्रियों द्वारा रचित श्री देव–शास्त्र–गुरु की 71 पूजाएँ एक साथ एक ही कृति में प्रस्तुत हैं। यह प्रकाशन अखिल जैन समाज के लिये अपूर्व उपलब्धि है।

श्री दीवानजी एक श्रेष्ठ विद्वान/लेखक/कवि हैं, जिनकी अद्यावधि 88 कृतियॉ साहित्य जगत् को समर्पित की गयी हैं। कृति सर्वोपयोगी है। **ब्र. (डॉ.) भरत जैन**

शास्त्रि-परिषद् प्रशिक्षण शिविर एवं खुला अधिवेशन सम्पन्न

बाराँ । सराकोद्धारक आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज के सान्निध्य में ऑनलाईन वेबिनार के माध्यम से अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद् का शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर दिनांक 8 जुलाई से 12 जुलाई 2020 तक आयोजित किया । प्रशिक्षण शिविर 8 जुलाई से 11 जुलाई तक प्रतिदिन तीन सत्रों में आयोजित हुआ । 8 जुलाई 2020 को प्रातः 8 बजे से उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया । जिसमें सर्वप्रथम मंगलाचरण ब्र. अनीता दीदी, मंजुला दीदी द्वारा किया गया । तत्पश्चात् चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन श्री महावीर सेठी, अशोक गंगवाल, मनीष जैन, अमन जैन द्वारा किया गया । **कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. श्रेयांस जैन बड़ौत द्वारा की गई ।** ब्र. जयकुमार जैन निशांत द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया एवं शास्त्रि-परिषद् की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की । पंडित विनोद जैन रजवांस द्वारा विषय प्रवर्तन एवं शास्त्रि-परिषद् शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की जानकारी दी गयी । औपचारिक कक्षा का प्रारंभ किया गया। तत्पश्चात् आचार्य श्री के मंगल प्रवचन और जिनवाणी स्तुति के साथ प्रथम सत्र का समापन हुआ ।

शिक्षण प्रशिक्षण -

डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत-चरणानुयोग, डॉ. वृषभ प्रसाद जैन लखनऊ-साहित्य एवं भाषा विज्ञान, डॉ. अनिल कुमार जैन प्राचार्य-न्याय, ब्र. रेखा दीदी-कर्म सिद्धान्त, पं. सुनील जैन द्रोणगिरि-तत्त्वार्थ सूत्र, ब्र. जय कुमार निशांत-वेदी प्रतिष्ठ एवं पंडित विनोद जी जैन, रजवांस ने प्रवचन कला का प्रशिक्षण प्रदान किया । प्रतिदिन सायंकालीन सत्र में अनेक विद्वानों के प्रवचन हुए जिसमें अरुण जैन शास्त्री-जबलपुर, लोकेश जैन शास्त्री-बाँसवाड़ा, पं. दीपक जैन-दिल्ली, पं. मुकेश जैन शास्त्री विनम्र, पं. राजेश जैन शास्त्री-ललितपुर, पं. आशीष जैन शास्त्री-सीकर, पं. श्रेयांस जैन शास्त्री-घुवारा, पं. विजय जैन शास्त्री-शाहगढ़ । प्रवचन समीक्षा पंडित श्री राजकुमार जैन सागर, डॉ. सुशील जैन मैनपुरी एवं पंडित श्री विनोद जैन रजवांस द्वारा की गई ।

समापन समारोह एवं खुला अधिवेशन - 12 जुलाई 2020

आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज की सन्निधि में दिनांक 12 जुलाई 2020 को प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह एवं खुला अधिवेशन आयोजित किया गया । उक्त कार्यक्रम की अध्क्षता डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत ने की । मंगलाचरण डॉ. धर्मेन्द्र जैन-दिल्ली ने किया । दीप प्रज्जवलन ब्र.मनीष जी संघस्थ आचार्य ज्ञानसागरजी ने किया। चित्र अनावरण श्री अशोक सेठी, अशोक गंगवाल, महावीर प्रसाद, विनोद जैन एवं मनोज जैन ने सम्पन्न किया । आचार्य श्री को शास्त्र भेंट का सौभाग्य अमन जैन तिजारा को प्राप्त हुआ ।

कार्यक्रम का संचालन परिषद के **महामंत्री ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत** ने करते हुए सर्वप्रथम उपस्थित सभी विद्वत्गण एवं श्रावकों का स्वागत एवं अभिनंदन अभिव्यक्त किया । **ब्र. जयकुमार जैन निशांत ने पिछले अधिवेशन की कार्यवाही प्रस्तुत की जिसे अध्यक्ष महोदय ने सर्वसम्मति से स्वीकृत किया ।** तत्पश्चात पंडित विनोद कुमार जी ने शास्त्री परिषद की गतिविधियों पर अद्योपान्त प्रकाश डाला ।

वरिष्ठ विद्वानों की श्रृंखला में डॉ. कमलेश कुमार जैन-वाराणसी, **डॉ. प्रेम सुमनजी-**उदयपुर, **डॉ.वृषभ प्रसाद जैन-**लखनऊ, **डॉ. सुशील कुमारजी-**मैनपुरी, **प्राचार्य अरुण कुमार-**ब्यावर, **डॉ.चिरंजीलाल बगड़ा-** कोलकाता, **डॉ. वीरसागर जैन-**दिल्ली ने अपने विचार रखे एवं शास्त्रि-परिषद् के कार्यों की सराहना करते हुए इस कार्य को निरंतर करने का भाव प्रकट किया।

तत्पश्चात शास्त्रि-परिषद् ने मुख्य रूप से साधुओं के शिथिलाचार, पुरातत्त्व का संरक्षण, अशुभ अमंगल का परिहार, प्राच्य भाषा का संरक्षण एवं चातुर्मास में सावधानियाँ उक्त विषयों की सार्वकालिक एवं वर्तमान प्रासंगिकता को देखते हुए प्रस्तावों को प्रस्तुत किए, जिनका समर्थन उपस्थित सभी महानुभावों ने करतल ध्वनि के माध्यम से किया।

सुझाव - अनेक विद्वानों द्वारा

पुणे से श्री अशोक जैन ने सुझाव दिया कि हम सबको आज की सूचना क्रान्ति का लाभ अधिकाधिक उठाना चाहिए। शास्त्रि-परिषद् का एक ऑफिशियल यू-ट्यूब चैनल और वेब पोर्टल होना चाहिए। जिसमें धर्म के सार, सुविचारों, कुरीतियों के विरोध के लिये छोटे-छोटे वीडियों क्लिप बनाकर अपलोड किये जाये जिससे कि अधिक प्रभावी ढंग से बात नयी पीढ़ी को ग्राह्य हो एवं हृदय हस्त में रहे।

डॉ. निर्मल जैन शास्त्री-टीकमगढ़ ने सुझाव दिया कि सभी आचार्य भगवन्तों से पंथवाद से रहित होने के लिए निवेदन करना चाहिए, ताकि श्रमण, श्रमण बने, आत्म साधना में रत रहें। शास्त्रि-परिषद् के पदाधिकारी व सदस्यगण शिथिलाचार के सहभागी न बनें।

पं. जिनेन्द्र सिंघई, बड़ा मलहरा ने सुझाव दिया कि दिगम्बर जैन समाज में बढ़ते हुए पंथवाद, संतवाद में सामंजस्यता होना, समय की आवश्यकता है।

डॉ. सोनल कुमार जैन दिल्ली ने सुज्ञाव दिया कि सविनय निवेदन है कि शांति कर्म का स्वरूप और रूपरेखा का दिशा-निर्देश जारी किए जाएं तो और अच्छा रहेगा एवं एकरूपता आ सकेगी।

पं. राहुल जैन शास्त्री मडदेवरा ने सुझाव दिया कि वर्तमान में अनेक संस्थाओं से जैन स्टॉफ को निकाला जा रहा वे अपना गुजारा कैसे करें? इसके लिए भी शास्त्रि-परिषद् कुछ कदम उठाये।

अध्यक्षीय उद्बोधन - डॉ. श्रेयांसकुमार जैन बड़ौत द्वारा

डॉक्टर साहब ने अपने कार्यकाल में शास्त्रि-परिषद् के माध्यम से जैन संस्कृति संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों को बताते हुए कहा - **विगत अनेक वर्षों से हम सभी सामाजिक कुरीतियों और विकृतियों को दूर कर सामाजिक चेतना लाने का प्रयास कर रहे हैं।** जिसमें हम काफी हद तक सफल भी हैं। हम युवा विद्वानों को प्रशिक्षण दे रहे हैं, जिससे वे आगामी समय में जैन दर्शन के गूढ़ रहस्यों को समझकर सामाजिक चेतना लाने में अपने दृढ़तम प्रयास कर सकें। युवा पीढ़ी को संस्कारित करने का कार्य करते हुए शास्त्रि-परिषद् निरंतर अपनी कर्तव्य निष्ठा एवं समर्पण के साथ कार्य कर रही है। हम आप निरंतर प्रयास करते रहेंगे जिससे हमारी सामाजिक चेतना जन-जन के लिए लाभकारी बन सके। **अधिवेशन में निम्न प्रस्ताव पारित किये गये -**

वर्तमान में श्रमण संस्था से जहाँ शिथिलाचार के समाचार प्राप्त हो रहे हैं, वही अनाचार-यौनाचार आदि की भी सूचनाएँ मिल रही हैं, जो जैन धर्म के आदर्श सिद्धांतों को दूषित ही नहीं करती अपितु युवा पीढ़ी में अश्रद्धा का भाव भी उत्पन्न करती हैं। यह चिंता का विषय है। अतः ऐसे विपरीत समय में देव-शास्त्र-गुरु के संरक्षण में कटिबद्ध अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद् की कार्यकारिणी समिति प्रस्ताव पारित करती है कि जो आचार्य सुकुमाल नंदी के नाम से विख्यात थे अब साधु, आचार्य नहीं हैं। इनके पूर्व कृत्यों को देखते हुए उनके कोर्ट से छूटने पर भी परिषद् उन्हें अब किसी परमेष्ठी पद पर नहीं मानेगी।

प्रस्तावक - डॉ. आनंद प्रकाश जैन कोलकाता समर्थक-पंडित चंद्र प्रकाश जैन 'चंदर', ग्वालियर

कोरोना वायरस के कारण जहाँ रोग से बचने की चिंता है वही रोग अन्य मनुष्यों में न फैले, ऐसी सद्भावना भी है, ऐसे समय में शासकीय आदेशों का पालन भी अनिवार्य है। मंदिर, बाजार, मिल्स, घर, आवागमन आदि सभी बंद हैं। आर्थिक गतिविधियों के साथ ही धार्मिक आयोजन एवं जिनवाणी का प्रचार-प्रसार अवरुद्ध हुआ है। राज्य आज्ञा का पालन करते हुए धार्मिक आयोजनों एवं अन्य गतिविधियों के लिए परिषद् की कार्यकारिणी प्रस्ताव पारित करती है कि परिषद् के विद्वान् ऑनलाइन मूलागम के आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय निरंतर कराएँ, जिससे धर्म की प्रभावना होती रहे।

प्रस्तावक - ब्रह्मचारी डॉक्टर धर्मेन्द्र भैया, दिल्ली समर्थक - पंडित राजकुमार जैन शास्त्री, सागर

अंतर्राष्ट्रीय प्रगति की स्पर्धा में व्यक्ति आंग्ल भाषा की ओर आकर्षित ही नहीं हो रहा है अपितु अगली पीढ़ियों को भी अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा दिलाने लगे हैं, जिससे जहाँ प्राच्य भाषा के प्रति अरुचि उत्पन्न हो रही है। वहीं जैन दर्शन, सिद्धांत के अध्ययन में बाधा उत्पन्न हो रही है। प्राच्य भाषाओं के विकास और उद्धार में परिषद् की महनीय भूमिका रही है, परिषद् के विद्वान निरन्तर क्रियाशील रहे हैं।

इसी शृंखला में परिषद् के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भाषा विज्ञान के मर्मज्ञ प्रोफेसर वृषभ प्रसाद जैन लखनऊ को राष्ट्रीय भाषा परिषद् में गौरवमय पद प्राप्त हुआ है। आपके माध्यम से प्राच्य विद्याओं के क्षेत्र में परिषद् की अहम् भूमिका रहेगी और संस्था के अन्य विद्वान् भी आपके मार्गदर्शन में कार्य कर सकेंगे, इस प्रकार प्राच्य भाषाओं का संरक्षण हो सकेगा।

प्रस्तावक - डॉ. आशीष जैन शास्त्री, शाहगढ़ समर्थक - पंडित सुकमाल जैन, सहारनपुर

जैनधर्म की प्राचीनता का आधार हमारी पुरातात्त्विक सम्पदा है, इसके संरक्षण के लिए हमें कृत संकल्पित होना अनिवार्य है। वर्षों से जैन धर्म की पुरा सम्पदा को अनेक विद्वान् संरक्षित कर रहे हैं किन्तु अब ऐसे कुछ विद्वान् ही शेष रह गए हैं और व्यवसायिक शिक्षा के आकर्षण से नवोदित विद्वान् पुरातत्त्व जैसे विषय में रुचि नहीं रखते हैं, अतः परिषद् प्रस्ताव पारित करती है कि पुरातत्त्व विषय की रुचि वाले विद्वानों को मूर्ति प्रशस्ति, शिलालेख वाचन का प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन किया जाए जिससे जैन पुरातत्त्व का संरक्षण किया जा सके।

प्रस्तावक - डॉ. सुनील कुमार जैन 'संचय', ललितपुर समर्थक - डॉ. अमित जैन आकाश, वाराणसी

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद् के वरिष्ठ विशेषज्ञ विद्वान् वर्षों से प्रतिवर्ष नवोदित विद्वानों को श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर किसी आचार्य, उपाध्याय, साधु संघ के सान्निध्य में जैन दर्शन सिद्धान्त का प्रशिक्षण प्रदान करते रहे हैं। साधु के सच्चरित्र एवं प्रतिभा का प्रभाव विद्वानों की आस्था को दृढ़ करता है किन्तु वर्तमान में अनेक साधु शिथिलाचार से दूषित हैं। अतः परिषद् की कार्यकारिणी समिति प्रस्ताव पारित करती है, कि जिन आचार्य, उपाध्याय, साधुओं पर चारित्र भ्रष्टता के आरोप लगे हैं, जो दुराचार में आरोपित हुए हैं, उनके सान्निध्य में परिषद् कोई कार्यक्रम आयोजित नहीं करेगी।

प्रस्तावक - पंडित जयंत कुमार जैन, सीकर समर्थक - डॉ. सुशील चंद्र जैन, मैनपुरी

भद्रबाहु संहिता में उल्लेख है कि शुभाशुभ घटनाओं के आने के पूर्व प्रकृति शुभाशुभ शकुन-अपशकुन के संकेत देती है, उनके शमन के उपाय भी आचार्यों ने बताए हैं। वर्तमान में भी कुछ ऐसे ही प्राकृतिक अपशकुन दिखाई दिए जिसमें लगातार ग्रहणों का होना प्रमुख है। हम देखते हैं जहाँ विश्व स्तरीय कोरोना वायरस नरसंहार कर रहा है वहीं आस्था के केन्द्र मंदिर में पूजा, आराधना भी प्रभावित है। लोगों में भय का वातावरण है, सिंहोनिया, खुरई आदि तीन जगह के मानस्तम्भ प्राकृतिक प्रकोप से क्षतिग्रस्त हुए हैं, प्रतिमाएँ खंडित हुई हैं। यह महा अपशकुन हैं कोई संकट आपदा हमें प्रभावित करें इसके पूर्व हमें इसके शमनार्थ उपाय करना चाहिए।

अतः शास्त्रि-परिषद् प्रस्ताव पारित करती है कि समस्त जैन समाज को सामूहिक रूप से शांति कर्म, शांति मंत्र जाप, शांति हवन आदि अनुष्ठान करने की प्रेरणा करे, जिससे आपदा का निवारण हो सके।

प्रस्तावक - पंडित विनोद कुमार जैन, रजवाँस समर्थक - पंडित कमलकुमार कमलांकुर, भोपाल

साधु संतों के चातुर्मास प्रारम्भ हो गये हैं और समाज की श्रमण और श्रावक दोनों संस्थाएँ आज विसंगतियों तथा शिथिलाचार के कारण चिंतित हैं, ऐसे समय में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद् सावधानी, समन्वय, समता तथा समझदारी का संदेश समाज को देते हुए निवेदन करती है कि

1. चातुर्मास काल में साधु संघ के पास अकेली महिलाएँ तथा आर्यिका संघ में अकेला पुरुष न जाए।
2. श्रावक और श्राविकाएँ, साधु साध्वियों से दूरी बनाए रखें।
3. साधुओं को डिजिटल सामग्री तथा भौतिक संसाधन न दें।
4. चातुर्मास स्थलों पर कैमरे लगवाएँ।
5. मंदिर समितियाँ, चातुर्मास समिति चातुर्मास की गतिविधियों पर ध्यान रखें।
6. श्रावक साधुओं से तंत्र-मंत्र कराने से बचें, यदि कोई साधु ऐसी गतिविधियाँ करता है, तो उन्हें समझाते हुए समाज को अवगत कराया जाये।
7. यदि साधु एकल बिहारी है तो समाज उन्हें किसी भी संघ में ही रहकर चातुर्मास करने का अनुरोध करें।
8. चातुर्मास के समय राष्ट्र धर्म का पालन करते हुए भीड़भाड़ वाले कार्यक्रम न करें।
9. साधुओं के बहुमान का पूरा ध्यान रखें।
10. चातुर्मास के काल में स्वाध्याय एवं संयम साधना को प्रमुखता दें, सांस्कृतिक कार्यक्रम को गौण करें।

प्रस्तावक - ब्रह्मचारी जय कुमार निशांत समर्थक - डॉक्टर कमल कुमार जैन, पुणे

उक्त प्रस्तावों की अनुमोदना दिनांक 12 जुलाई 2020, के खुले अधिवेशन में उपस्थित सभी महानुभावों द्वारा करतल ध्वनि के माध्यम से की गई।

शास्त्रि-परिषद् ने 128 पुस्तकों का पूर्व में प्रकाशन किया है एवं हम उनको पुनः प्रकाशन के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। प्राकृत-अपभ्रंश भाषाओं के संवर्द्धन और संरक्षण के लिए शास्त्रि-परिषद् शिविर और संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से कार्य करने के लिए दृढ़बद्ध है। शास्त्रि-परिषद् सदा आर्ष परम्परा की पोषक रही है और रहेगी। शास्त्रि-परिषद्, देव-शास्त्र-गुरु का प्रारूप जो यथावस्थित है, तदनुरूप ही वह जन-जन में बना रहे, यह प्रयास कर रही है।

मंगलवाणी - आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज

षष्ठ पट्टाचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा - **शास्त्रि-परिषद् विद्वानों की सबसे प्राचीन संस्था है। इसके विद्वानों ने समय-समय पर सामाजिक कुरीतियों एवं धर्म विरुद्ध आचरणों के प्रति विरोध करते हुए अपने कर्तव्य का पालन किया है।** समाज में होने वाली विकृतियों के विरुद्ध शास्त्रि-परिषद् सदैव कर्तव्यनिष्ठा के साथ खड़ी रही। परिषद् के माध्यम से जहाँ सामाजिक चेतना जिन शासन का प्रचार-प्रसार एवं धर्माचरण का कार्य किया गया। वहीं विद्वानों के द्वारा सृजित साहित्य से, सम्पादन से एवं गोष्ठियों के माध्यम से ग्रंथ प्रकाशन का कार्य भी निरंतर हो रहा है। खोजपूर्ण पत्रिका जैन सिद्धान्त आज सर्वमान्य पत्रिका है। शास्त्रि-परिषद् की गतिविधियाँ बुलेटिन के नाम से सभी जगह प्रसारित हो रही है। मुझे विश्वास है शास्त्रि-परिषद् अपने दायित्व का निर्वहन करेगी।

परिषद् के अध्यक्ष डॉ. श्रेयांश कुमार बड़ौत, महामंत्री ब्र. जयकुमार निशांत, संयुक्त मंत्री पं. विनोद कुमार रजवाँस, प्रचार मंत्री-डॉ. अमित आकाश एवं सभी वरिष्ठ विद्वान् इस परिषद् में पूरे मनोयोग से कार्य करते हुए जिन शासन की प्रभावना कर रहे हैं। शिविर का आयोजन करके विपरीत परिस्थितियों में भी शास्त्रि-परिषद् ने अपने कर्तव्य का पालन किया है। आज खुले अधिवेशन में समाज में चेतना हेतु जो प्रस्ताव पारित किए गए हैं, उनका क्रियान्वयन होना चाहिए।

डॉ. आशीष जैन शाहगढ़, मनीष जैन तिजारा, अमन जैन तिजारा ने तत्परता से कार्य करते हुए इस कार्यक्रम को सोशल मीडिया, यू-टयूब, फेसबुक आदि के माध्यम से सभी जगह प्रचार-प्रसार करके सराहनीय कार्य किया है।

आभार प्रदर्शन- डॉ. आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़

दिनांक 8 जुलाई से 12 जुलाई 2020 तक आयोजित इस शिविर में अपनी सन्निधि प्रदान करने वाले आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करते हुए शास्त्रि-परिषद् के अध्यक्ष डॉ. श्रेयांस जैन बड़ौत, महामंत्री ब्र. जयकुमार निशांत, संयुक्त मंत्री पं. विनोद जैन रजवांस एवं समस्त परिषद के सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। परमोकारी अध्यापनकला में निपुण विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से अपना सहयोग प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं का भी आभार प्रदर्शन किया। उपस्थित सभी महानुभावों का आभार प्रदर्शित करते हुए पुनः शास्त्रि-परिषद् को इसी प्रकार का मनोभाव प्राप्त होता रहे, धन्यवाद ज्ञापित किया।

बारां दिगम्बर जैन समाज को आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज के मंगल चातुर्मास का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आपने शास्त्रि-परिषद् के इस कार्यक्रम हेतु पूर्ण समर्पण एवं श्रद्धा भाव से कार्य किया है, परिषद आपके प्रति आभार व्यक्त करते हुए इसी प्रकार धर्म प्रभावना करने में निरंतर सहयोग प्रदान करती हैं, ऐसे मनोभावपूर्वक कृतज्ञता ज्ञापित की।

श्रद्धांजलि अभिव्यक्ति - उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा

विगत वर्ष में समाधि करने वाले आचार्य, उपाध्याय, साधु, आर्यिका माताजी, ऐलक जी, क्षुल्लक जी, क्षुल्लिका माताजी एवं वरिष्ठ विद्वान् एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपने कर्तव्य का पालन करते हुए जीवन का समापन किया है, उनके प्रति शास्त्रि-परिषद् बहुमान व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि समर्पित करती है । तत्पश्चात् 9 बार णमोकार मंत्र का ध्यान करके श्रद्धांजलि समर्पित की गई ।

जिनवाणी स्तुति के साथ सभा समाप्ति की घोषणा की गयी । सभी उपस्थित महानुभावों ने आपस में जय जिनेन्द्र बोलकर पुनः शास्त्रि-परिषद् में जुड़ने का मनोभाव व्यक्त किया ।

- डॉ. आशीष जैन आचार्य
शाहगढ़

कार्यकारिणी बैठक संपन्न

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्रि–परिषद् कार्यकारिणी समिति की ऑनलाइन बैठक डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बडौत की अध्यक्षता में दिनांक 22 जून 2020 को रात्रि 8:30 बजे प्रारंभ हुई जिसमें निम्नांकित विद्वत्जन सम्मिलित हुए डॉ. श्रेयांस कुमार बड़ौत, डॉ. सुशील चंद्र जैन, मैनपुरी, डॉ. वृषभ प्रसाद जैन, लखनऊ, ब्रह्मचारी जयकुमार जैन निशांत, टीकमगढ़, पंडित विनोद कुमार जैन, रजवाँस, डॉ. अमित जैन आकाश, वाराणसी, डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन, गाजियाबाद, पंडित जयंत कुमार जैन, सीकर, डॉ. आनंद प्रकाश जैन, कोलकाता, पंडित चंद्रप्रकाश जैन 'चंदर', ग्वालियर, पंडित राजकुमार जैन शास्त्री, सागर, पंडित कमल कुमार जैन कमलांकुर, भोपाल, पंडित सुकमाल जैन, सहारनपुर, ब्रह्मचारी धर्मेंद्र भैया, दिल्ली, डॉ. कमल कुमार जैन, पुणे, डॉ. आशीष जैन, शाहगढ़, डॉ. सुनील जैन, संजय, ललितपुर, पंडित गजेंद्र कुमार, फर्रुखनगर आदि।

मंगलाचरण पूर्वक बैठक प्रारंभ हुई जिसमें अनेक विषयों पर विचार–विमर्श हुआ, जो निम्नानुसार है। जो आचार्य सुकुमालनंदी नाम से विख्यात थे अब साधु आचार्य नहीं है उनके पूर्व कृत्यों को देखते हुए उनके कोर्ट से छूटने पर भी परिषद् उन्हें अब किसी परमेष्ठीपद पर नहीं मानेगी। परिषद् के विद्वान् ऑनलाइन मूलागम के आयर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय निरंतर कराएं जिससे धर्म की प्रभावना होती है। पुरातत्त्व विषय की रुचि वाले विद्वानों को मूर्ति, प्रशस्ति शिलालेख वाचन का प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन किया जाए जिससे जैन पुरातत्त्व का संरक्षण किया जा सके । जिन आचार्य, उपाध्याय, साधुओं पर चारित्र भ्रष्टता के आरोप लगे हैं, जो दुराचार से आरोपित हुए हैं उनके सान्निध्य में परिषद् कोई कार्यक्रम आयोजित नहीं करेगी। समस्त जैन समाज को सामूहिक रूप से शांति कर्म, शांति मंत्र, जाप, हवन आदि का अनुष्ठान करने की प्रेरणा करें जिससे आपदा का निवारण हो सके आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए एवं भगवान महावीर स्वामी की जयकारे के साथ बैठक संपन्न हुई।

वात्सल्यमूर्ति
वर्धमान सागर जी
महाराज को शास्त्र भेंट
(यरनाल कर्नाटक)

शास्त्रि-परिषद्
गौरव का सम्मान

शास्त्रि-परिषद्
बुलेटिन का विमोचन
यरनाल (कर्नाटक)

गुरु सान्निध्य का
परम सुख पाते
विद्वत्जन के स ाथ
पं. श्री बैनाड़ा जी

यह पिच्छी
मुझे कब मिलेगी
भावना भाते
पं. रतनलाल बैनाड़ाजी

गुरु रज प्राप्ति
का चर्मोत्कर्ष

Sugan/0930 212 55 94